



॥ तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ॥

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

आश्रम दूरभाष : 0145-2772112

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति का त्रैमासिक मुखपत्र

(सदस्यों में निःशुल्क प्रसारण)



वर्ष - 17

अंक - 3

जुलाई - सितम्बर 2022

E-mail : gautamashrampushkar@gmail.com

Web : www.gautamashrampushkar.com

संरक्षक :

मोहनराज उपाध्याय

लाम्पोलाई

9414119195

7665019195

परामर्श :

सीताराम जोशी

पाली

9414590841

प्रबन्ध सम्पादक :

वी. पी. शर्मा

अजमेर

9414556553

सम्पादक :

शिवराज चाष्टा

अजमेर

9414284277

7023664277

सह-सम्पादक :

नन्दकिशोर तिवाड़ी

अजमेर

9351368916

सम्पादकीय.....

सम्मानित ट्रस्टीगण तथा पाठक बन्धु,

सादर वन्दे मातरम्

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद पत्रिका का इस वर्ष का जुलाई-सितम्बर 2022 का यह तीसरा अंक आपके पठनार्थ प्रस्तुत है। इसी अंक में श्री पुष्कर गौतमाश्रम का वित्तीय वर्ष 2021-22 का चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा ऑडिट किया हुआ लेखा-जोखा (आय-व्यय खाता व बैलेंस शीट) भी प्रस्तुत है जो गौतमाश्रम की आर्थिक वस्तुस्थिति का दिग्दर्शन कराता है। यद्यपि आश्रम का सारा आय-व्यय ट्रस्ट समिति के आन्तरिक अंकेशकों द्वारा देखा जाता है फिर भी ट्रस्टी बन्धुओं से यह अपेक्षा रहती है कि वे इनमें दिये गए आँकड़ों को तार्किक दृष्टि से देखें तथा आवश्यक समझने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

पत्रिका के गत अंक में गौतमाश्रम की शैक्षणिक गतिविधियों सम्बन्धी नवीन योजना का उल्लेख करते हुए ट्रस्टियों तथा समाज बन्धुओं से अपील की गई थी कि इस योजना के लिए एक एक लाख रुपये के अधिक से अधिक सदस्य बनाए जाएं। 12 जून को सम्पन्न प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक में अध्यक्ष जी ने इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए चिन्ता प्रकट की कि दो माह से अधिक अवधि बीत जाने पर भी ट्रस्टियों की ओर से कोई सकारात्मक पहल नहीं की गई है। इस अंक में शैक्षणिक परिषद के लिए सदस्य बनाए जाने सम्बन्धी निवेदन फिर से किया गया है। आशा है कि सभी ट्रस्टी विशेष रुचि लेकर इस कार्य को प्राथमिकता देंगे।

इस तिमाही में आने वाले सभी पर्वों.. स्वतन्त्रता दिवस, रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी व शारदीय नवरात्रों आदि की सभी ट्रस्टियों तथा समाज बन्धुओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय

शिवराज चाष्टा

सम्पादक

गौतमाश्रम समाचार.....

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की माह अप्रैल 2022 से जून 2022 की तीन माह अवधि की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ न्यासी महानुभावों तथा समाज बन्धुओं की सूचनार्थ निम्न प्रकार है-

1. इन तीन महिनों की अवधि में कुल 6884 यात्रियों को आवासीय सुविधायें प्रदान की गई जिसमें 87 यात्री बसों के यात्री भी सम्मिलित हैं। इन 6884 यात्रियों में से 780 यात्री हमारे समाज बन्धु थे एवं शेष 6104 अन्य समाज से थे। इन तीन महीनों की अवधि में 8

शादी एवं एक श्रीमद्भागवत कथा 2 अन्य समाज की मीटिंग आदि समारोहों का आयोजन हुआ जिससे आश्रम को 22,94,250/- की आय प्राप्त हुई एवं एक प्रबन्ध कारिणी मीटिंग आयोजित हुई जिसमें ट्रस्टी जन उपस्थित हुए।

2. उपरोक्त अवधि में समाज बन्धुओं की ओर से विभिन्न मदों में 7,87,175/- की राशि आश्रम विकास एवं भेंट सहयोग स्वरूप प्राप्त हुई है। इसमें 1000 व उससे ऊपर की राशि प्रदाताओं का विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र.सं	दानदाता	निवास	राशि	मद
1	श्री दामोदर प्रसाद जी शर्मा (झींपिया वाले)	रावतभाटा	200000	कमरा निर्माण पेटे
2	श्री चन्द्र दत्त जी जोशी	अजमेर	100000	कमरा निर्माण पेटे
3	श्री शिवराज जी शर्मा (गुडगाव)	अजमेर	100000	कमरा निर्माण पेटे
4	श्री रोहित जी चाष्टा	अजमेर	100000	कमरा निर्माण पेटे
5	श्री कैलाशचन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	100000	शैक्षणिक परिषद सदस्यता हेतु
6	श्री घेवर चन्द जी शिवकुमार जी पुत्र श्री शंकर लाल जी उपाध्याय	पो. रेण (मेडता) हाल-गुवाहाटी (आसाम)	100000	शैक्षणिक परिषद सदस्यता हेतु
7	श्री जगदीश चन्द जी पुत्र स्व. श्री आनन्दी लाल जी	जयपुर	50000	आश्रम विकास
8	श्रीमती गायत्री उपाध्याय पत्नी स्व. रमेश चन्द्र जी उपाध्याय	अजमेर	11000	आश्रम विकास
9	श्री रामेश्वर जी, हरिकिशन जी, लक्ष्मीनारायण जी	डेगाना	5100	विवाह उपलक्ष में
10	श्री राजगोपाल जी शर्मा	लाम्पोलाई	2100	गणगौर उत्सव पर भेंट
11	श्रीमती रूकमणी देवी पत्नी जवाहरलाल जी उपाध्याय जोधपुर		2100	भेंट सहयोग
12	श्री घनश्याम जी, गोविन्द जी, सुशील जी प्रदीप जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	2100	विवाह उपलक्ष में
13	श्री श्याम सुन्दर जी शर्मा	कोलकाता	2100	भोजनार्थ सहयोग
14	श्री वेंकटेश्वर प्रसाद जी	अजमेर	1100	उत्सव सहयोग
15	श्रीमती स्नेहलता शर्मा	ब्यावर	1100	भेंट सहयोग
16	श्री मनोहर जी पंचारिया	पाली	1100	विवाह उपलक्ष में
17	श्री रामस्वरूप उपाध्याय जी तिलोक जी उपाध्याय	गुड़ा	1100	विवाह उपलक्ष में
18	श्री महेश जी उपाध्याय	मेडता सिटी	1100	विवाह उपलक्ष में
19	श्री विष्णु दत्त जी शर्मा	अजमेर	1100	विवाह उपलक्ष में

20	श्री मनोहरलाल जी, रमेशकुमार जी, कन्हैया लाल जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	1100	विवाह उपलक्ष में
21	श्री गजानन्द जी, पप्पुराम जी जोशी	आलनियावास	1100	विवाह उपलक्ष में
22	श्री विशाल जी गौतम	आजाद नगर, भीलवाड़ा	1100	स्व. कैलाश जी की पुण्य तिथि पर भोजनार्थ
3.	श्री पुष्कर गौतम आश्रम की अनुपम योजना “अन्नक्षेत्र स्थाई कोष” के अन्तर्गत मार्च 2021 तक 406 समाज बन्धुओं ने इस योजना से जुड़कर प्रत्येक ने दस हजार रुपये की राशि स्थाई कोष में जमा कराकर अपने पूर्वजों की पुण्य तिथि व अन्य उपलक्ष में प्रतिवर्ष नियत			तिथि पर छात्रावासी विप्र बटुकों के भोजन के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किये जाने अथवा स्मरण किये जाने हेतु इस योजना में भाग लिया है। अप्रैल 2022 से जून 2022 की अवधि में 02 और समाज बन्धुओं ने इस योजना में भाग लिया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है:-

अन्नक्षेत्र स्थाई कोष में जुड़ने वाले सहभागी

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवास	पुण्य स्मृति में	तिथि
1	श्री त्रिलोकचन्द सत्यनारायण जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्रीमती रेणू देवी पत्नी त्रिलोकचन्द जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
2.	श्रीमती कामिनी पत्नी श्री हेमेन्द्र जी उपाध्याय	अजमेर	स्व. श्री ब्रह्मदत्त जी उपाध्याय	फाल्गुन कृष्णा अष्टमी
4.	उपरोक्त योजना के अन्तर्गत समाज बन्धुओं की ओर से बताई गई तिथि पर उनके प्रियजनों की स्मृति में गौतमाश्रम द्वारा छात्रावासी विप्र बटुकों को भोजन कराकर श्रद्धासुमन अर्पित किये जाते रहे हैं। माह		अप्रैल से जून 2022 में आने वाली पुण्य तिथियों एवं जन्म उत्सव पर जिनका पुण्य स्मरण किया गया उनका पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है :-	

अप्रैल माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री बालाप्रसाद पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्रीमती पार्वती बाई पत्नी श्री पूरणमल जी	चैत्र कृष्ण अमावस्या
2	श्री संतोष जी, अशोक जी, गोपी जी कलवाडिया	सुजानगढ़	श्री लखमीचंद कमला देवी की प्रेरणा से अन्नदान	चैत्र कृष्ण अमावस्या
3	श्री विद्याधर जी चौबे	पुर भीलवाड़ा	स्वेच्छा से भेंट	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
4	श्री कृष्णवल्लभ जी शर्मा	ब्यावर	माताजी श्रीमती पार्वती देवी शर्मा की प्रेरणा से अन्नदान	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
5	श्री सत्यनारायण जी भट्ट एवं श्रीमती गंगा बाई	भीलवाड़ा	स्व. दिनेश कुमार जी भट्ट	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
6	श्री संतोष जी, विनोद जी उपाध्याय	आकोला	श्री मनीष कुमार जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल द्वितीया
7	श्री कैलाश जी, महेश जी आचार्य	उदयपुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी आचार्य	चैत्र शुक्ल द्वितीया
8	श्री रविकान्त जी व्यास	भीलवाड़ा	नवजात पुत्र की स्मृति में अन्नदान	चैत्र शुक्ल तृतीया

9	श्री वेंकटेश्वर प्रसाद, कैलाश चंद शर्मा	अजमेर	स्व. श्रीमती गुलाब देवी पत्नी श्री रामचंद्र जी व्यास	चैत्र शुक्ल षष्ठी
10	श्री मदनलाल जी उपाध्याय	औरंगाबाद	स्व. श्री अनिल कुमार, रामगोपाल जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल षष्ठी
11	श्री सत्यनारायण जी पंचारिया	खीनच जोधपुर	स्व. श्रीमती कमला देवी पत्नी आशकरण जी पंचारिया	चैत्र शुक्ल षष्ठी
12	श्रीमती लता बालकृष्ण जी तिवाड़ी	भोपाल	स्व. श्रीमती कुसुमलता प्रहलाद जी चौधरी	चैत्र शुक्ल सप्तमी
13	श्री ओमप्रकाश जी, अशोक कुमार जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्रीमती फला बाई दगाडू सेठ	चैत्र शुक्ल अष्टमी
14	श्रीमती रमा देवी उपाध्याय	भीलवाडा	स्व. श्री संतोष कुमार जी	चैत्र शुक्ल अष्टमी
15	श्री बद्रीनारायण जी शर्मा	भीलवाडा	स्व. श्री रघुनाथ जी शर्मा	चैत्र शुक्ल दशमी
16	श्री सुशील जी शर्मा	चित्तौड़	स्व. श्री देवी दत्त जी शर्मा	चैत्र शुक्ल दशमी
17	श्री दामोदर जी पुरुषोत्तम जी उपाध्याय	आकोला	स्व. श्री रामस्वरूप जी उपाध्याय	चैत्र शुक्ल एकादशी
18	श्री हनुमान प्रसाद जी पुत्र श्री गोपाल प्रसाद जी शर्मा	मालपुरा टोंक	स्व. श्रीमती दुर्गा देवी पत्नी स्व. श्री भवंरलाल जी	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
19	श्री चंद्रदत्त जी जोशी	अजमेर	स्व. श्री बद्रीलाल जी जोशी	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी
20	श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	भीलवाडा	स्व. श्रीमती संतोष देवी व्यास	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी
21	श्री श्यामसुन्दर जी व्यास	मूडंबा नागौर	स्व. श्रीमती सरजू देवी व्यास	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा
22	श्री लोकेश जी पुत्र श्री कृष्णविलास जी शर्मा	दूनी देवली (टोंक)	श्रीमती बादाम देवी पत्नी श्री कृष्णविलास जी शर्मा	वैशाख कृष्ण द्वितीया
23	श्रीमती अनिता शर्मा पत्नी श्री लोकेश जी शर्मा	जयपुर	श्रीमती कमला देवी पत्नी श्री कृष्ण चंद्र जी	वैशाख कृष्ण चतुर्थी
24	कुमारी शैलेजा तिवाड़ी पुत्री श्री ज्ञानदत्त जी तिवाड़ी	दिल्ली	जन्मदिवस उपलक्ष्य पर	प्रतिवर्ष 22 अप्रैल
25	श्री मदनलाल जी उपाध्याय	औरंगाबाद	स्व. श्रीमती कौशल्या देवी उपाध्याय	वैशाख कृष्ण सप्तमी
26	श्रीमती श्यामा शर्मा	उदयपुर	स्व. श्री रामनारायण जी तिवाड़ी	वैशाख कृष्ण सप्तमी
27	श्री श्याम शर्मा (Adv.), हमेन्द्र शर्मा, प्रदीप शर्मा, दिलीप शर्मा	उदयपुर	स्व. श्री रामनारायण जी शर्मा	वैशाख कृष्ण सप्तमी
28	डॉ. श्री अशीम जी एवं निशिता उपाध्याय	रतलाम	स्व. श्री प्रधुम्न जयन्ति लाल जी उपाध्याय	वैशाख कृष्ण अष्टमी
29	श्री रमाकान्त जी अमृत लाल जी शास्त्री	अजगरा	स्व. श्री बोदूराम जी बहन चांद बाई	वैशाख कृष्ण अष्टमी
30	श्री रामस्वरूप जी पंचारिया	अहमदाबाद	स्व. श्रीमती अल्का पुत्री आर.बी. पंचारिया	वैशाख कृष्ण नवमी
31	श्री गिरीजेश कुमार जी, शिवकुमार जी शास्त्री	पाली	स्व. श्रीमती सावित्री देवी पत्नी शिवकुमार जी शास्त्री	वैशाख कृष्ण नवमी

32	श्रीमती कमला देवी शर्मा	इंदौर	स्व. श्री मनोहर लाल हीरालाल जी चाष्टा	वैशाख कृष्ण दशमी
33	श्रीमती सीता देवी पत्नी स्व. बृजलाल जी नाराणिया	हैदराबाद	स्व. बृजलाल जी नाराणिया	वैशाख कृष्ण एकादशी
34	श्रीमती अनसूया तिवाड़ी पत्नी श्री मांगी लाल तिवाड़ी	जोधपुर	स्व. श्री रामेश्वर लाल जी तिवाड़ी	वैशाख कृष्ण एकादशी
35	श्री अमित एवं सुमित मुकुन्द सेठ	सोलापुर	स्व. श्री मुकुन्द दगडू सेठ उपाध्याय	वैशाख कृष्ण अमावस्या
36	श्री दामोदर लाल जी संदीप जी जोशी	जोधपुर	स्व. श्री बंशीधर जी जोशी (गार्ड साहेब)	वैशाख कृष्ण अमावस्या
37	श्री नारायण लाल जी जोशी	पूना	स्व. श्री जयनारायण जी जोशी	वैशाख कृष्ण अमावस्या
38	श्रीमती बदामी देवी	भीलवाडा	स्व. श्री बट्टीनारायण जी शर्मा	वैशाख कृष्ण अमावस्या
39	श्री मूलचन्द जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती दुर्गा शर्मा	वैशाख कृष्ण अमावस्या

मई माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री नंदकिशोर जी मोतीलाल जी जोशी	बैंगलोर	स्व. श्रीमती अयोध्या बाई	वैशाख शुक्ल द्वितीया
2	श्री बालाप्रसाद जी पूरणमल जी तिवाड़ी	पूना	स्व. श्रीकान्त पूरणमल जी नारायण जी सोलापुर	वैशाख शुक्ल तृतीया
3	श्री बेगाराम जी सिंवाल	पो. बिरमाना श्रीगंगानगर	स्वेच्छा से ब्राह्मण भोजन	वैशाख शुक्ल तृतीया
4	श्री सतीष जी गिरदावर	देवडूंगरी किशनगढ़	स्व. श्रीमती रामकन्या देवी	वैशाख शुक्ल तृतीया
5	श्री विजय कुमार संजय कुमार जी तिवाड़ी	जलगांव महाराष्ट्र	स्व. श्री भंवरलाल जी महकरण जी तिवाड़ी	वैशाख शुक्ल चतुर्थी
6	श्रीमती राधा देवी जोशी	प्रतापनगर चित्तौड़गढ़	श्री बालमुकुन्द जी जोशी	वैशाख शुक्ल षष्ठी
7	श्री नरेश चन्द्र जी व्यास पुत्र श्री मुरलीधर जी	भीलवाडा	स्व. श्री मुरलीधर जी व्यास	वैशाख शुक्ल सप्तमी
8	श्री चंद्रकिशोर, केवल किशोर, राजेन्द्र कुमार, नरेन्द्र कुमार पुत्र श्री चंद्रशेखर जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्रीमती चांद कंवर पत्नी श्री चंद्रशेखर जी	वैशाख शुक्ल सप्तमी
9	श्री सीताराम जी उपाध्याय एवं परिवार	जसवंतगढ़	स्व. श्री झुमंर मल जी उपाध्याय	वैशाख शुक्ल अष्टमी
10	श्रीमती श्यामा देवी जोशी	प्रतापगढ़	स्व. श्री गोपाल जी जोशी	वैशाख शुक्ल एकादशी
11	श्री सीताराम जी जोशी	पाली	स्व. श्री गिरधारी लाल जी जोशी	वैशाख शुक्ल द्वादशी
12	श्री जुगल किशोर जी, सत्यनारायण जी, मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई मेडता	स्व. श्री गणपतलाल जी पंचारिया	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी
13	श्री कैलाश जी जाजड़ा (काठा वाले)	किशनगढ़	स्व. श्रीमती भंवरी देवी जाजड़ा	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
14	श्री मोहनलाल जी शर्मा	दालिया डीडवाणा	स्व. श्री विनोद कुमार जी उपाध्याय	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी

15	श्री नन्दलाल जी विष्णु दत्त जी	रामसर नसीराबाद	स्व. राजेन्द्र कुमार जी चौबे	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
16	श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	भीलवाड़ा	स्व. श्री इन्द्र जी रमेश जी	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा
17	श्रीमती सुमन व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्री शिवदत्त जी जोशी	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा
18	श्री राजेश कुमार, मनोज कुमार, दिनेश कुमार जी गौतम	पुष्कर	स्व. श्रीमती शान्ती देवी पत्नी श्री सावित्री प्रसाद जी गौतम	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
19	श्री शिवभगवान महेशकुमार जोशी	मुम्बई	स्व. श्रीमती दया देवी (उमा)	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
20	श्री चंद्रदत्त जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती सोनी बाई पत्नी स्व. श्री बद्री लाल जी	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया
21	श्री रविकान्त जी व्यास	भीलवाड़ा	नवजात पुत्र स्मृति में	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया
22	श्री मुरलीधर जी द्विवेदी	सोलापुर	स्व. श्रीमती शांता बाई मदन गोपाल जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी
23	श्री ओमप्रकाश जी मूलचंद जी चौबे	नीमच	स्व. श्रीमती कस्तूरी बाई पत्नी श्री मूलचंद जी चौबे	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी
24	श्रीमती सुमन व्यास	भीलवाड़ा	स्व. श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी
25	श्री बालाप्रसाद जी पूरणमल जी तिवाड़ी पूना		स्व. श्री पूरणमल नारायण प्रसाद जी तिवाड़ी	ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी
26	श्रीमती उषा शर्मा पत्नी स्व. योगेन्द्र मोहन जी शर्मा	नाना खेडा उज्जैन	स्व. श्री योगेन्द्र मोहन जी	ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी
27	डा. राकेश मुकेश जी दुबे	अजमेर	स्व. श्री भास्कर दुबे	ज्येष्ठ कृष्ण नवमी
28	श्री जुगल किशोर जी तिवाड़ी	डोम्बोवली वेस्ट थाने	स्व. श्रीमती प्रभावती	ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी
29	स्व. रामस्वरूप जी उपाध्याय परिवार आकोला	लाम्पोलाई	स्व. श्री रामगोपाल जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी
30	श्री घनश्याम जी जोशी	पो. लाम्बलीयाकलां तह. भोपालगढ़ (जोधपुर)	स्व. श्री रामकिशन जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी
31	श्री ओमप्रकाश जी तिवाड़ी	सोलापुर	स्व. श्री मनमोहन जी तिवाड़ी	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
32	श्री चंद्रकिशोर, केवल किशोर, राजेन्द्र कुमार, नरेन्द्र कुमार पुत्र श्री चंद्रशेखर जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्रीमती केसर बाई	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
33	श्री भीकमचंद जी शशि कुमार जी पंचोली बडौदरा		स्व. श्री किशनलाल जी पंचोली	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
34	श्रीमती चंद्रकान्ता जी डॉ. अनिल जी उपाध्याय	जोधपुर	स्व. श्री रामजीवन जी उपाध्याय	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
35	श्री लक्ष्मी नारायण जी उपाध्याय (ट्रस्टी) भीलवाड़ा		स्व. श्रीमती भूरी बाई	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

36	श्री मोहनलाल जी जोशी	इन्दौर	स्व. गोपीकिशन जी जोशी	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या
37	श्री अनिल जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्री विश्वेश्वर जी गील	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा

जून माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्री नन्द किशोर तिवाड़ी	अजमेर	स्व. श्रीमती मंजू तिवाड़ी	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
2	डॉ. राकेश दुबे, मुकेश दुबे	अजमेर	स्व. श्री सत्य प्रकाश जी दुबे	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी
3	श्री वेदप्रकाश जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. कौशल्या देवी त्रिपाठी	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी
4	श्री रामस्वरूप जी उपाध्याय परिवार	जलगांव	धर्मपत्नी स्व. श्रीमती विमला बाई	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी
5	श्री कीर्ति कुमार जी शर्मा (भारद्वाज)	रतलाम	स्व. श्री कृष्ण वल्लभ जी शर्मा	ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी
6	श्री नारायण लाल जी जयनारायण जी जोशी	पूना	स्व. श्रीमती अमरी देवी जोशी	ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी
7	श्री कैलाश जी, महेश जी आचार्य	उदयपुर	स्व. श्री कन्हैया लाल जी आचार्य	ज्येष्ठ शुक्ल नवमी
8	श्री आलोक कुमार शर्मा	किशनगढ	जन्मोत्सव पर माताश्री श्रीमती रामकन्या शर्मा	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
9	श्रीमती कस्तूरी बाई एवं पुत्र मदन मोहन जी त्रिपाठी	नाथद्वारा राजसंमद	स्व. वैद्य श्री श्यामसुन्दर जी त्रिपाठी	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
10	श्री चन्द्र दत्त जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती सीता देवी पत्नी चन्द्रदत्त जी जोशी	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी
11	श्री नरेन्द्र कुमार जी, रवि कुमार जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्री देवकी नन्दन जी शर्मा	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
12	श्रीमती शान्ती देवी पत्नी श्री सावित्री प्रसाद जी गौतम	पुष्कर	स्व. श्री गोवर्धन जी सिंवाल	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
13	श्री सुरेश जी, रमेश जी, दिनेश जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्री गोपाल जी तिवाड़ी	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
14	श्रीमती गायत्री देवी उपाध्याय	अजमेर	स्व. श्री रमेश चंद जी उपाध्याय	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
15	श्री रामेश्वर लाल जी पंचारिया	हाल बैंगलोर (लाम्पोलाई)	स्व. श्रीमती लक्ष्मीबाई पत्नी जयनारायण जी पंचारिया	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी
16	श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जोशी	किशनगढ	स्व. श्री परमानंद जी जोशी	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी
17	श्रीमती श्यामा शर्मा	देवलियाकलां (अजमेर)	स्व. श्री रामगोपाल जी त्रिपाठी (पण्डा)	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
18	श्रीमती गीता देवी व पुत्र, केके जोशी	पो. तिहारी (अजमेर)	स्व. श्री शिव दत्त जी जोशी	आषाढ कृष्ण द्वितीया
19	श्री शिवप्रकाश जी शर्मा व परिवार	मुम्बई	स्व. श्री भंवरलाल जी शर्मा	आषाढ कृष्ण तृतीया
20	श्री उम्मेदमल जी राजाराम जी उपाध्याय	पीलवा	स्व. श्री श्रीलाल जी केदार मल जी उपाध्याय	आषाढ कृष्ण पंचमी
21	श्री राधेश्याम जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती बसन्ती देवी पत्नी गोकुल चंद जी	आषाढ कृष्ण पंचमी
22	श्री आलोक कुमार जी	किशनगढ	स्व. श्री राधेश्याम जी	आषाढ कृष्ण पंचमी

23	श्रीमती शारदा देवी चाष्टा	अजमेर	स्व. श्री गणपत लाल जी चाष्टा	आषाढ कृष्ण सप्तमी
24	कुमारी शैलेजा तिवाड़ी	दिल्ली	स्व. श्री ज्ञानदत्त जी तिवाड़ी	प्रति वर्ष 23 जून
25	श्री गोपाल कृष्ण गुरु जी	पो. बिजोलिया भीलवाड़ा	स्व. श्री ओमप्रकाश जी गुरुजी	आषाढ कृष्ण त्रयोदशी
26	श्री मदन लाल जी शर्मा	उदयपुर	स्व. श्रीमती नर्बदा देवी	आषाढ कृष्ण अमावस्या
27	श्री खींवसर जी पुत्र काशीराम जी शर्मा	पाली	स्व. श्रीमती हंजा देवी	आषाढ कृष्ण अमावस्या
28	श्री घेवर चंद जी, शिव कुमार जी उपाध्याय	गुवाहाटी असम	स्व. श्री शंकर लाल जी उपाध्याय	आषाढ शुक्ल प्रतिपदा

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा..... ।

जो जस करिय सो तस फल चाखा..... ।।

पूर्व जन्म के कर्मों से ही हमें इस जन्म में माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी-प्रेमिका, मित्र-शत्रु, सगे सम्बन्धी, इत्यादि संसार के जितने भी रिश्ते नाते हैं सब मिलते हैं। क्योंकि इन सबको हमें या तो कुछ देना होता है या हमें इनसे कुछ लेना होता है। वैसे ही संतान के रूप में हमारा कोई पूर्व जन्म का सम्बन्धी ही जन्म लेकर आता है। शास्त्रों में चार प्रकार के जन्म को बताया गया है -

- 1. ऋणानुबन्ध :-** पूर्व जन्म का कोई ऐसा जीव जिससे आपने ऋण लिया हो या उसका किसी भी प्रकार से धन नष्ट किया हो, तो वो आपके घर में संतान बनकर जन्म लेगा और आपका धन बीमारी में, या व्यर्थ के कार्यों में तब तक नष्ट करेगा जब तक उसका हिसाब पूरा ना हो।
- 2. शत्रु पुत्र :-** पूर्व जन्म का कोई दुश्मन आपसे बदला लेने के लिये आपके घर में संतान बनकर आयेगा, और बड़ा होने पर माता-पिता से मारपीट या झगड़ा करेगा, या उन्हें सारी जिन्दगी किसी भी प्रकार से सताता ही रहेगा।
- 3. उदासीन :-** इस प्रकार की संतान माता-पिता को न तो कष्ट देती है और ना ही सुख। विवाह होने पर ऐसी संतानें माता-पिता से अलग हो जाती हैं।
- 4. सेवक पुत्र :-** पूर्व जन्म में यदि आपने किसी की खूब सेवा की है तो वह अपनी की हुई सेवा का ऋण उतारने के लिये आपकी सेवा करने के लिये पुत्र बनकर आता है। आप यह ना समझें कि यह सब बातें केवल मनुष्य पर ही लागू

होती हैं। इन चार प्रकार में कोई सा भी जीव आ सकता है।

जैसे आपने किसी गाय की निःस्वार्थ भाव से सेवा की है, तो वह भी पुत्र या पुत्री बनकर आ सकती है। यदि आपने गाय को स्वार्थ वश पाला और उसके दूध देना बन्द करने के पश्चात उसे घर से निकाल दिया हो तो वह ऋणानुबन्ध पुत्र या पुत्री बनकर जन्म लेगी।

यदि आपने किसी निरपराध जीव को सताया है तो वह आपके जीवन में शत्रु बनकर आयेगा। इसलिये जीवन में कभी किसी का बुरा नहीं करें। क्योंकि प्रकृति का नियम है कि आप जो भी करोगे उसे वह आपको सौ गुना करके देगी। यदि आपने किसी को एक रूपया दिया है तो समझो आपके खाते में सौ रूपये जमा हो गये हैं। यदि आपने किसी का एक रूपया छीना है तो समझो आपकी जमा राशि से सौ रूपये निकल गये।

इसलिए मनुष्य जन्म मिला है तो उसका सदुपयोग करके अपना भविष्य संवार लो, कौन जाने कब आपके सुकर्म आपको जन्म-मरण के चक्रव्यूह से आजाद करवा दें और कब आपके द्वारा किये गए छोटे से दुष्कर्म भी आपको पुनर्जन्म के चक्रव्यूह में फंसा दें।

इसलिए हे मनुष्य, अभी भी समय है, जाग जा, संभल जा, संतों की शरण में जा और अपना जीवन सफल बना, न जाने किस घड़ी जीवन की शाम हो जाये!

हरि बोल.....

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की प्रबन्ध कारिणी समिति बैठक दिनांक 12.06.22 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 12.06.2022, रविवार को श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति की प्रबन्ध कारिणी समिति की बैठक श्री मोहनराज उपाध्याय की अध्यक्षता में महर्षि हॉल में प्रातः 11.00 बजे आयोजित हुई।

आज की बैठक में 11 प्रबन्धकारिणी पदाधिकारी एवं सदस्य स्वयमेव उपस्थित हुए तथा 5 ट्रस्टी बन्धु उपस्थित हुए और श्री शिवराज जी शर्मा प्रबन्ध कारिणी सदस्य एवं श्री विजयकुमार जी उपाध्याय संरक्षक ऑनलाईन वर्चुअल उपस्थित हुए।

मंत्री ने आज की बैठक में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों सदस्यों एवं ट्रस्टी बन्धुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया तथा मंचासीन अध्यक्ष जी एवं उपाध्यक्ष जी से महर्षि गौतम के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने का आग्रह किया।

अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री उपमंत्री आदि ने महर्षि गौतम के चित्र पर माल्यार्पण किया व दीप प्रज्वलित कर धूप अगरबत्ती से पूजन कर प्रसाद अर्पण किया। तत्पश्चात महर्षि गौतम के जय घोष के साथ बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की गई।

मंत्री ने अध्यक्ष जी की अनुमति से बैठक की कार्यवाही शुरू करते हुए सर्वप्रथम आज की बैठक का एजेन्डा जो कि दिनांक 30.05.2022 को सभी सदस्यों को प्रेषित किया गया था, प्रस्तुत किया। तत्पश्चात मंत्री ने एजेन्डानुसार कार्यवाही शुरू की।

मद संख्या 1:- गत बैठक दिनांक 20.02.2022 की कार्यवाही विवरणी की पुष्टि।

मंत्री ने गत बैठक की कार्यवाही विवरणी का पठन किया, जिस की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई।

मद संख्या 2:-गत बैठक के निर्णयों पर क्रियान्वयन रिपोर्ट।

मंत्री ने गत बैठक के निर्णयों पर क्रियान्वयन रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि -

1. संवाद पत्रिका की विज्ञापन राशि श्री संपतराज जी

ब्यावर की 21000/- रूपये अभी तक जमा नहीं हुए हैं। श्री वीरेन्द्र जी शर्मा जोधपुर की सन 2021 एवं 2022 के 20000/- रूपये जमा होना शेष है तथा श्री सीताराम जी पाली के सन् 2022 के 10000/- रूपये भी जमा होना शेष है।

- दानदाताओं के फ्लेक्स बोर्ड बनवाने के निर्णय पर अभी कोटेशन पर अन्तिम निर्णय नहीं हो पाया है, अध्यक्ष जी ने विस्तृत जानकारी दी।
- ट्रस्टियों के आठ रिक्त पदों की पूर्ति के संबंध में निर्णयानुसार संबंधित क्षेत्र के ट्रस्टियों को पत्र प्रेषित कर प्रस्ताव आमंत्रित कर लिये गये थे लेकिन अभी तक कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है। अतः इस पर अगली बैठक में कार्यवाही की जाये।
- अन्नक्षेत्र के संबंध में अभी तक किसी भी सदस्य से कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ है।

मद संख्या 3:- सत्र 2021-22 के ऑडिटेड आय-व्यय बैलेन्स शीट का प्रस्तुतिकरण एवं पारित करना।

मंत्री ने सत्र 2021-22के ऑडिटेड बैलेन्स शीट, आय-व्यय आदि लेखा प्रस्तुत किये। इस पर श्री वासुदेव उपाध्याय अंकेक्षक ने अपने विचार रखते हुए जानकारी दी कि आय-व्यय में जो आय से अधिक व्यय दर्शाया गया है वह वास्तविक में हानि नहीं है यह तो जो डेपरिशियेसन 22,72,468/- रूपये के कारण है अन्यथा 11,76,823/- का लाभ है। इसी प्रकार पिछली बैठक में कुछ बातें आई थी कि आश्रम ध्रुव कोष एवं अन्नक्षेत्र स्थाई कोष की राशि है उसकी तो एफडी आर जमा होनी चाहिये तो आश्रम ध्रुव कोष 51,64,803/- और एफडी आर 48,03,419/- है तथा अन्न क्षेत्र स्थाई कोष 41,55,252/- और एफडी आर 37,44,226/- है। अन्तर की राशि है वह नव निर्माण पर व्यय में हो रखी है। अब तो ट्रस्ट से आयकर विभाग को पैन कार्ड नम्बर सहित सूची जायेगी तो ही 80जी की छूट मिलेगी। इस पर मंत्री ने स्पष्ट किया कि हमने सभी दान दाताओं की सूची मय पैन कार्ड, आधार कार्ड सहित प्रेषित

कर दी है। ऑडिटेड आय-व्यय बैलेन्स शीट आदि लेखा सर्वसम्मति से पारित किया गया।

मद संख्या 4:- ट्रस्ट समिति की साधारण सभा दिनांक 27.03.2022 के निर्णयों पर क्रियान्वयन की समीक्षा।

मंत्री ने जानकारी दी कि 27.03.2022 की साधारण सभा में दो तीन महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये थे कि शैक्षणिक गतिविधियों हेतु भूमि खरीद करना उसके लिये संयोजन समिति गठित करना। संयोजन समिति का संयोजक श्री मोहनराज उपाध्याय को सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया था। संयोजन समिति के सदस्यों हेतु प्रत्येक संभाग से दो-दो ट्रस्टियों के नाम एक सप्ताह में प्रस्तावित करने थे। दूसरा 500 सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था और प्रत्येक ट्रस्टी को तीन माह में तीन तीन सदस्य बनाने का दायित्व दिया गया था लेकिन दो माह से अधिक का समय हो गया अभी तक किसी भी ट्रस्टी से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है जबकि स्मरण पत्र भी प्रेषित किया गया था।

अभी श्री शिवराज जी ने जरूर अपने सुझाव व प्रस्ताव वॉट्सअप द्वारा प्रेषित किये हैं उनके प्रस्ताव हैं कि:-

1. समाज बन्धुओं से संपर्क करने पर यह बात सामने आई कि शैक्षणिक परिषद के नियम उपनियम क्या हैं ट्रस्टी के बराबर सहयोग राशि देने पर उनका गौतमाश्रम में क्या स्टेटस रहेगा। यह स्पष्ट होना चाहिये इसलिये इसके नियम उपनियम बनने चाहिये।
2. सदस्यता फार्म का प्रारूप तैयार करना चाहिये जिससे सदस्य बनने वाले को पूरी जानकारी हो सके सभी ट्रस्टियों को फार्म की तीन-तीन प्रति भिजवाई जाये।
3. संयोजन समिति के लिये मैं अजमेर जिले से श्री बालकृष्ण शर्मा जूनियां (केकडी) एवं श्री केवल किशोर शर्मा ब्यावर का नाम प्रस्तावित करता हूँ।

अध्यक्ष जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि बड़े दुख की बात है कि आज भी हम वहीं खड़े हैं जहां दो माह पूर्व मे थे। ऐसे तो हम जमीन नहीं ले सकते फिर संयोजक बनने का क्या अर्थ है। 103 ट्रस्टियों में से किसी ने भी कोई प्रयास करने की जानकारी नहीं दी। हम प्रयास करेंगे तो अवश्य सहयोग मिलेगा। देवनगर रोड़ पर दो माह पूर्व जो

जमीन 18 से 20 लाख रूपये बीघा में मिल रही थी आज उसका भाव 22 लाख रूपये बीघा हो गया। सीताराम जी सोहन जी, हनुमान जी, मंत्री जी हमने विचार विमर्श कर एक ब्रोचर छपवाया है जिसका आज विमोचन कर आप सबको दिया जायेगा ताकि समाज बन्धुओं को आप बता सकें।

अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, हनुमान प्रसाद जी, जवाहर जी आदि ने ब्रोचर का विमोचन कर सभी सदस्यों को दिया गया तथा निर्णय लिया कि सभी ट्रस्टियों को इस ब्रोचर की प्रति डाक द्वारा प्रेषित कर दी जाये। अध्यक्ष जी ने कहा कि साधारण सभा में इसके नाम की बात भी आई थी तो अब इसका नाम श्री पुष्कर गौतमाश्रम शैक्षणिक परिषद पुष्कर रखा गया है। जिस पर सभी ने सहमति व्यक्त की।

श्री हनुमान प्रसाद शर्मा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमने अजमेर में समाज बन्धुओं के समक्ष इस मामले को रखा। वहां पर कुछ सुझाव प्राप्त हुए हैं कि जमीन अजमेर के आस पास जनाना अस्पताल से होकरा के पास ली जाये तो आवागमन की सुविधा आसान रहेगी। इससे अधिक छात्र-छात्रायें आ सकेगीं और शिक्षाविद भी अपनी सेवायें देने में आगे आ सकेंगे। दूसरा इसका एकेडेमिक डायरेक्टर पद स्थापित होना चाहिये समाज बन्धु सदस्य बनने को तैयार है यह उनके सुझाव थे जो मैंने प्रस्तुत किये ट्रस्ट में उन सदस्यों की क्या स्थिति रहेगी यह भी स्पष्ट होना चाहिये।

अध्यक्ष जी ने कहा कि आपके सुझाव पर अगली साधारण सभा में विचार किया जायेगा। वर्तमान में तो यह है कि ट्रस्ट में कोई ट्रस्टी पर रिक्त होता है तो प्राथमिकता संबंधित क्षेत्र के शैक्षणिक परिषद के सदस्यों को दी जायेगी।

मंत्री ने सदस्यता फार्म का प्रारूप प्रस्तुत किया उस पर सावित्री प्रसाद जी ने कहा कि इसमें प्रेरक का नाम भी आना चाहिये। कुछ संशोधन पश्चात सदस्यता फार्म के प्रारूप को स्वीकृति प्रदान की गई।

मद संख्या 5:- ट्रस्ट समिति की वार्षिक साधारण सभा आयोजित करने पर विचार कर निर्णय लेना।

अध्यक्ष जी ने कहा कि मद संख्या 6 पर निर्णय के अनुसार साधारण सभा पर निर्णय लिया जा सकेगा।

मद संख्या 6:- प्रबन्ध कारिणी समिति के नव निर्वाचन के संबंध में निर्णय लेना ।

सदस्यों ने विधान के प्रावधानों की जानकारी चाही कि क्या नवनिर्वाचन को आगे बढ़ाया जा सकता है इस पर मंत्री ने जानकारी दी कि संशोधित विधान की धारा 8 में यह प्रावधान है कि विशेष परिस्थिति वश अपरिहार्य कारणों से साधारण सभा का आयोजन असंभव हो तो प्रबन्ध कारिणी समिति अधिकतम 6 माह तक कार्यकाल में वृद्धि कर सकेगी ।

इस पर अध्यक्ष जी ने श्री सावित्री प्रसाद जी से कहा कि आपने बहुत चुनाव करवाये हैं आपको अनुभव है इस पर आप अपने विचार रखें । श्री सावित्री प्रसाद जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि विधान में विशेष परिस्थिति वश शब्द हैं तो हमारे सामने विशेष परिस्थिति है निर्माण कार्य चल रहा है जुलाई तक पूर्ण नहीं हो सकता है । भूमि खरीदने के लिये सदस्य बनाने जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य हैं जो ज्यादा अहमयित रखते हैं मैंने और तिलोक जी तिवाड़ी ने काफी विचार विमर्श कर यह प्रस्ताव रखने का तय किया कि वर्तमान प्रबन्ध कारिणी का कार्यकाल 6 माह बढ़ा दिया जाए । 6 माह बाद चुनाव करवाये जाए, श्री तिलोक जी तिवाड़ी ने इसका समर्थन किया ।

श्री हनुमान प्रसाद जी ने भी अपने विचार रखते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया कि अगर जुलाई में चुनाव करवाते हैं तो निर्माण कार्य में अड़चन आ जायेगी और निर्माण कार्य पूर्ण होने में कम से कम चार माह और लगेंगे और इस ब्लॉक का लोकापर्ण वर्तमान अध्यक्ष के तत्वाधान में ही हो तो अच्छा रहेगा । पूर्व में भी ऐसा होता रहा है । श्री जवाहरलाल जी ने कहा कि इस 6 माह में इस ब्लॉक का निर्माण व हेरिटेज गेट का निर्माण पूर्ण हो जाना चाहिये ।

मंत्री ने कहा कि मैं व्यक्तिगत तौर पर तो विधान में निर्धारित समय पर नवनिर्वाचन का समर्थक हूँ लेकिन आप सब जो निर्णय लेगे वो मुझे मान्य होगा ।

वर्तमान प्रबन्ध कारिणी के कार्यकाल को 6 माह बढ़ाने का प्रस्ताव पर अध्यक्ष जी ने उपस्थित सदस्यों से विचार आमंत्रित किये । श्री जवाहर जी, श्री वासुदेव जी, श्री नवलकिशोरी लाल गोस्वामी, श्री राजेन्द्र जी, श्री रामपाल

जी, श्री हनुमान प्रसाद जी, श्री अशोक त्रिवेदी, श्री जितेन्द्र कुमार जोशी, श्री बालकृष्ण शर्मा, श्री सुखलाल पंचोली, श्री विद्याधर जी, श्री रामस्वरूप जी जोशी सभी ने एक स्वर में प्रस्ताव का समर्थन किया । अध्यक्ष जी ने ऑनलाईन जुड़े श्री धिवराज जी व विजयकुमार जी तथा टेलीफोन पर श्री सीताराम जी, श्री गोपी किषन जी, श्री राजाराम जी से प्रस्ताव पर विचार मांगे सभी ने वर्तमान प्रबन्धकारिणी के कार्यकाल को 6 माह बढ़ाने के प्रस्ताव का समर्थन किया । इस प्रकार वर्तमान प्रबन्ध कारिणी का कार्यकाल 6 माह बढ़ाने का सर्व सम्मत निर्णय लिया गया ।

अध्यक्ष जी ने अपने विचार रखते हुए जवाहर जी से कहा कि यह काम आपसे ही करवाऊंगा । मुझे से पूर्व अध्यक्षों और प्रबन्ध कारिणी ने बहुत विकास किया । मैं उनको नमन करता हूँ । कोरोना काल के कारण हम कुछ पिछड़ गये ।

आपके इस निर्णय पर भी लोग कोर्ट में जा सकते हैं । उन्होने हम पांच व्यक्तियों पर मान-हानि का दावा किया । नोटिस दिया हमने जवाब दे दिया । आगे वापस कुछ नहीं आया, मुझे इस बात की खुशी है कि गौतमाश्रम की कार्यवाही को कोई तो ध्यान से पढ़ता है । 40 नये ट्रस्टियों के समय भी कोर्ट में गये । हमने साधारण सभा के निर्णय को लागू कर दिया । 40 ट्रस्टी नये आ गये केस चलता रहेगा ।

मैंने 40 ट्रस्टी के समय सीताराम जी, सोहन जी को कहा था कि समझौते का प्रयास करें, बिना शर्त समझौता कर लें, कोई नाराज होगा तो मैं मनाऊंगा और ट्रस्टी पर विचार कर लेंगे । मेरा उद्देश्य यह था कि ट्रस्ट का पैसा फालतू कोर्ट में खर्च नहीं हो । लेकिन ठीक है वह हम पर एक अंगुली उठा रहे हैं तो उन पर भी चार अंगुली उठेगी । चाहे कोई भी संस्था हो हरिद्वार, त्र्यम्बकेश्वर, जोधपुर नगर सभा, महासभा शैक्षणिक ट्रस्ट है भूणाबाय हो । मेरा प्रयास उन तक बात पहुँचाने का था, नहीं माने उनकी इच्छा ।

मद संख्या 7:- अध्यक्ष जी की अनुमति से अन्य मुद्दों पर विचार ।

1. अध्यक्ष जी ने कहा कि हेलोज रोड़ गेट को हेरिटेज स्वरूप प्रदान करने का निर्णय लंबित है अब इस कार्य

- को प्रारम्भ करना है तो जवाहर जी से विचार विमर्श पश्चात इस पर करीब 41,00,000/- रूपये अनुमानित व्यय आयेगा। सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई।
2. छात्रावास के संबंध में अध्यक्ष जी ने कहा कि छात्र अनुशासन हीन हैं। संस्कृत ज्योतिष कर्मकाण्ड का अध्ययन करने वाले छात्र को ही प्रवेश देना चाहिये। श्री जितेन्द्र कुमार जोशी अजमेर ने कहा कि समिति का सदस्य होने के कारण मुझे छात्रावास को नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त हुआ तो अध्यक्ष जी की बात शत प्रतिशत सही है। छात्र अनुशासनहीन हैं या तो अलग से वार्डन हो जो इनको कंट्रोल करे इसमें आश्रम का फालतू पैसा खर्च होगा। सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि नये सत्र से केवल संस्कृत, कर्मकाण्ड के अध्ययनरत छात्रों को उनके अभिभावकों की उपस्थिति में छात्रावास में प्रवेश दिया जाए।
 3. समाज बन्धुओं के देव लोकगमन पर ट्रस्ट समिति की ओर से शोक सन्देश देने के लिये क्षेत्र के ट्रस्टियों को अधिकृत करने का प्रस्ताव आया। इस पर श्री हनुमान प्रसाद जी एवं बालकृष्ण जी ने कहा कि हमने अजमेर में ऐसा निर्णय लिया था लेकिन परिणाम शून्य रहा। इसलिये कोई फायदा नहीं होगा। कोई शोक सन्देश देगा ही नहीं जायेगा ही नहीं, इस पर जवाहर जी ने कहा कि 100 में से 30 तो शोक सन्देश देंगे वही ठीक है। इसमें संस्था का क्या नुकसान है। श्री वासुदेव जी ने कहा कि गौतम जयन्ती के समय दे सकते हैं। मंत्री ने कहा कि सभी ट्रस्टियों को क्षेत्रवार लेटर पैड जिस पर शोक सन्देश लिखा हो प्रेषित कर देते हैं वो देगें तो ठीक नहीं देंगे तो भी ठीक है। स्वीकृति प्रदान की गई।
 4. श्री अशोक त्रिवेदी ने कहा कि प्रवासी राजस्थानवासी का सम्मेलन आयोजित करने पर विचार करना चाहिये। इस पर अध्यक्ष जी ने कहा कि पूर्व में अपना निर्णय लिया हुआ है। सभी ट्रस्टियों को 10-10 समाज बन्धु लाने की जिम्मेदारी देवें। श्री सावित्री प्रसाद जी ने कहा कि समय निश्चित कर लें उस समय

- आश्रम बुक नहीं करें। सर्व सम्मति से 01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2022 के मध्य प्रवासी राजस्थानवासी सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया।
5. मंत्री ने कहा कि शादी समारोह पूर्ण होने पर पूर्ण राशि जमा करवाने में विलम्ब करने के मामले सामने आये हैं इस पर विचार विमर्श पश्चात निर्णय लिया गया कि भवन आरक्षण राशि के अतिरिक्त 25 प्रतिशत राशि अमानत के तौर पर जमा की जाए। ऐसे निर्देश व्यवस्थापक को दे दिये जायें।
 6. बर्तन के संबंध में यह शिकायत आई है कि हमारे पास कुछ बर्तनों की कमी है। तिलोक जी तिवाड़ी ने कहा कि आजकल सभी हलवाई अपने बर्तन लाते हैं इस पर अध्यक्ष जी ने कहा कि 20 प्रतिशत बर्तन आश्रम से भी लेते हैं। सोहन जी पाली के हलवाई से लिस्ट लायेंगे उसके अनुसार निर्णय ले लेंगे।

बर्तन की दर बहुत कम है इस पर टेन्ट व हलवाई आदि से रेट की जानकारी कर उसके अनुसार वृद्धि कर दी जाये।

मद संख्या-8:-ट्रस्टी जनों एवं परिवार जनों के देवलोक गमन पर श्रद्धांजलि अर्पित करना।

मंत्री ने जानकारी दी कि इस अवधि में हमारे वयोवृद्ध शिक्षाविद ट्रस्टी श्री डॉ. बद्रीनारायण जी पंचोली, श्री बद्रीनारायण जी के भाई श्री हरिशंकर पंचोली, पूर्व ट्रस्टी स्व. मदन लाल जी जाजड़ा जोधपुर के सुपुत्र श्री सूरज प्रकाश जाजड़ा, ट्रस्टी श्री खेमराम जी बाड़मेर के सुपुत्र श्री बजरंग शर्मा, ट्रस्टी श्री देवराज शर्मा पाली की धर्म पत्नी श्रीमती सुआ देवी, ट्रस्टी आशीष शर्मा बीकानेर के पिताजी डॉ. श्री चन्द शर्मा, श्री सोहन लाल जोशी पाली के भाई श्री किषन लाल जोशी की धर्म पत्नी श्रीमती शान्ति देवी, श्री मोहनलाल जी पंचारिया केलवा कलां जोधपुर श्री रामेश्वर लाल जी शर्मा राजोसी (अजमेर) का स्वर्गवास हुआ है। सभी दिवंगत आत्मों की शान्ति एवं सदगति की ईश्वर से प्रार्थना करते हुए दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये।

(वेंकटेश्वर प्रसाद शर्मा)
मंत्री

श्री पुष्कर गौतमाश्रम के वित्तीय वर्ष 2021-22 के चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट से ऑडिट किये हुए आय-व्यय खाता तथा बैलेन्स शीट ट्रस्टियों तथा समाज बन्धुओं के अवलोकनार्थ निम्न अनुसार प्रस्तुत है :-

SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI, PUSHKAR

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2022

EXPENDITURE	AMOUNT (In Rs.)	INCOME	AMOUNT (In Rs.)
Audit / Tax Fee	21000	Electric Receipt	165250
Bank Charges	1050	Building Receipts	3079760
Electricity Exp.	802281	Donation on Kartik Purnima	101912
Less : O/s On 01-04-21	71801	Donation Received	93029
Add : O/s On 31-03-22	<u>73935</u>	Misc. Income	21554
Exp. on Cleaning	101411	Bhojnalya	68250
Exp. on Kartik Purnima	228970	Linen Receipts	194076
Exp. On CCTV	17380	Cleaning Receipts	40000
Building Repairs & Painting Exp.	47928	Utencils Receipts	37843
Newspaper Exp.	1985	Contribution Tent House	177610
Meeting Exp.	140755	Samvad Receipts	34000
Postage	35865	Generator Receipts	41082
Printing & Stationary	26917	Festival Receipts	1100
Electricity Water Repairing	131955	Interest Income	
Ashram Exp.	108528	Annshetra	209273
Washing Exp.	35460	Ashram	<u>98778</u>
Telephone Exp.	16403	S.B. Interest	38148
Less : O/s On 01-04-21	1061		
Add : O/s On 31-03-22	<u>1082</u>	Excess of Expenditure over Income	1095645
Travelling Exp.	12996		
Fire Extinguisher Equipment Exp.	17051		
Water Exp.	5166		
Less : O/s On 01-04-21	738		
Add : O/s On 31-03-22	<u>738</u>		
Bhojnalaya Exp.	174264		
Bonus Expense	37400		
Locker Rent	2360		
Salaries	912485		
Lawn Expense	42917		
Festival Exp.	13475		
Computer Exp.	74173		
Generator Exp.	17362		
Legal & Temple Exp.	79800		
Samvad Exp.	115350		
Depreciation	2272468		
Total	5497310	Total	5497310

FOR SANJEEV KUMAR JAIN & CO
CHARTERED ACCOUNTANTS
F.R. No. 006114C

FOR SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI
Secretary Treasurer

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH 2022

LIABILITIES	AMOUNT (In Rs.)	ASSETS	AMOUNT (In Rs.)
General Fund :			
Ashram Fund	36538438	FIXED ASSESTS :	
Opening Balance	22167806	As per Schedule : 1:	42384309
Add : Transfer from		Other Current Assets	
Ashram Corpus Fund	4433150	AVVNL (Security)	68172
Add : Transfer from		Ashram Advance	5000
Ashram Dev. Fund	11033127	TDS Receivable 2019-20	20072
Less : Excess of Exp. over Income	<u>-1095645</u>	TDS Receivable 2020-21	14867
		TDS Receivable 2021-22	34726
Corpus Funds :		Closing Balance	
Ashram Corpus Fund	757000	F.D.R. Annshetra	3744226
Opening Balance	4433150	F.D.R. Ashram	4803419
Less : Transfer to		Accrued Interest SBI	76938
Ashram Fund	<u>-4433150</u>	Cash	41274
Add : This year	<u>757000</u>	P.N.B.	348411
		S.B.I.	<u>1190793</u>
Ashram Dhruv Fund	5164803		10205061
Opening Balance	764803		
Add : This year	<u>4400000</u>		
Ashram Development Fund	3829000		
Opening Balance	11033127		
Less : Transfer to			
Ashram Fund	<u>-11033127</u>		
Add : This year	<u>3829000</u>		
Students Welfare Dhruv Fund	294921		
Opening Balance	294921		
Add : This year	<u>0</u>		
Education Fund	111000		
Opening Balance	0		
Add : This year	<u>111000</u>		
Samaroh Fund	266000		
Opening Balance	250000		
Add : This year	<u>16000</u>		
Annshetra Dhruv Fund	4155252		
Opening Balance	3754950		
Add : This year	<u>400302</u>		
Group Marriage Fund	145036		
Opening Balance	145036		
Less : This Year	<u>0</u>		
Current Liabilities:			
Building Reservation Deposit	1378502		
Opening Balance	1226301		
Add : This year	3501601		
Less : Refund	<u>3349400</u>		
Security Deposit :	0		
Opening Balance	533900		
Add : This year	13600		
Less : This year	<u>547500</u>		
Caution Money :	16500		
Opening Balance	16500		
Add : This year	0		
Less : This year	<u>0</u>		
Outstanding Exp.	75755		
Electric Bill	73935		
Water Bill	738		
Telephone Bill	1082		
TOTAL	52732207	TOTAL	52732207

FOR SANJEEV KUMAR JAIN & CO
CHARTERED ACCOUNTANTS
 F.R. No. 006114C

FOR SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM TRUST SAMITI
Secretary **Treasurer**

Shri Pushkar Gautam Ashram Trust Samiti, Pushkar
FINANCIAL YEAR : 2021-22

Schedule : 1 - Fixed Assets

Particulars	Rate of Dep. %	As at 01/04/2021	Addition / Deduction 01.04.21 to 30.09.21	01.10.21 to 31.03.22	Total	Dep. 2021-22	As at 31.03.2022
Land	0	2933504	0	0	2933504	0	2933504
Murti	0	700	0	0	700	0	700
Gold & Silver Jewellery	0	11764	0	0	11764	0	11764
Building	5	33124741	112339	4310426	37547506	1769615	35777891
Havan Kund	10	513	0	0	513	51	462
Mandir Gumbad	10	102514	0	0	102514	10251	92263
Air Conditioners	10	929982	0	0	929982	92998	836984
Refrigerator	10	7518	0	0	7518	752	6766
Furniture	10	361935	0	66000	427935	39494	388441
Water Cooler	10	83434	0	0	83434	8343	75091
Geysers	10	108224	0	0	108224	10822	97402
Fans	10	102397	0	0	102397	10240	92157
Elevator	10	589950	0	0	589950	58995	530955
Tube Lights	10	24210	0	0	24210	2421	21789
Utensils	15	61661	0	0	61661	9249	52412
Bicycle	15	1283	0	0	1283	192	1091
Steel Box	15	2891	0	0	2891	434	2457
Linen & Dari	15	508538	0	0	508538	76281	432257
Mike Set	15	4987	0	0	4987	748	4239
Aarti Set	15	1216	0	0	1216	182	1034
Transformer	15	60853	0	0	60853	9128	51725
CC TV Camera	15	115138	0	0	115138	17271	97867
Fire Equipment	15	16854	0	0	16854	2528	14326
Printer	15	9211	0	0	9211	1382	7829
Bike	15	34391	0	0	34391	5159	29232
Table Fan	15	1013	0	0	1013	152	861
Chapati Bhatti	15	3869	0	0	3869	580	3289
Bati Oven	15	160	0	0	160	24	136
Road Bericher	15	7063	0	0	7063	1059	6004
LED TV	15	12896	0	0	12896	1934	10962
Dice	15	5279	0	0	5279	792	4487
Dish TV	15	995	0	0	995	149	846
Capicitor	15	53361	0	0	53361	8004	45357
PBX Box	15	11432	0	0	11432	1715	9717
Generator	15	871563	0	0	871563	130734	740829
Computer	40	1972	0	0	1972	789	1183
TOTAL		40168012	112339	4376426	44656777	2272468	42384309

ब्राह्मण के कर्तव्य कर्म

भारत में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों की व्यवस्था की गई है। चारों ही वर्ण अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्राचीन काल में भारत वर्ष में गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार व्यक्ति को उसका वर्ण प्राप्त होता था। इनमें से पहले वर्ण ब्राह्मण को कुछ लोगों ने अलग करके देखने का प्रयास किया है और कहीं-कहीं स्वयं ब्राह्मण ने भी अपने आपको अन्य वर्णों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास किया है। यदि वेद की दृष्टि से देखा जाए तो ब्राह्मण श्रेष्ठ होकर भी अन्य सभी वर्ण के लोगों का प्रथम सेवक उपदेशक होने के नाते है। उसकी श्रेष्ठता दूसरों का उपकार करने के लिए है। ब्राह्मण श्रेष्ठ इसलिए है कि उसका हर क्षण, हर पल परोपकार के लिए होता है। जिस ब्राह्मण का ऐसा जीवन व्यवहार नहीं होता, वह ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता। ब्राह्मण का जीवन दूसरों के उद्धार के लिए है और उसके गुण दूसरों की भलाई के लिए हैं। ऐसा नहीं है कि उसकी श्रेष्ठता, उसका जीवन और उसके गुण केवल और केवल उसी के लिए हों और अन्य लोगों का मानसिक, आर्थिक, सामाजिक या शारीरिक उत्पीड़न करने के लिए हों।

प्रत्येक वर्ण का व्यक्ति दूसरे वर्ण के भले के लिए या कल्याण के लिए कैसे उपयोगी हो सकता है और कैसे अपने जीवन को दूसरों के कल्याण में समर्पित कर सकता है। इसी को वर्ण धर्म कहते हैं। जिसे हमारे वेदों के माध्यम से मनु महाराज व अन्य वैदिक विद्वानों ने बहुत सुंदर ढंग से स्पष्ट किया है। उनकी इस व्यवस्था को देखकर लगता है कि सब सबके कल्याण में लगे हुए हैं और सब सबके कल्याण में लगे रहें। इसी के लिए वर्ण व्यवस्था की पवित्र व्यवस्था समाज में की गई है।

महर्षि मनु और जातिवादी व्यवस्था

इस सम्बन्ध में वेदवर्णित मन्त्रों को हमें समझना चाहिए। जिन्होंने वर्ण व्यवस्था केवल इसलिए की है कि लोग एक-दूसरे के सहयोगी बनें और सद्भाव रखते हुए जीवन यात्रा में एक दूसरे का हाथ पकड़कर चलते रहें। वेदों की ऐसी ही भावना से प्रेरित होकर पहले ब्रह्मा ने और फिर

मनु ने चार वर्णों के कर्तव्य-कर्म निर्धारित किये। जिन लोगों ने महर्षि मनु पर जातिवादी व्यवस्था का जनक होने का आरोप लगाया है, वास्तव में वह अज्ञानी ही कहे जाएंगे, क्योंकि महर्षि मनु ने कहीं पर भी जन्म के आधार पर जाति की व्यवस्था को अपनी सहमति प्रदान नहीं की है।

वास्तव में हमारे ऋषियों के द्वारा ऐसी व्यवस्था की गई कि जो कोई व्यक्ति अपनी जीविकोपार्जन के लिए जिस वर्ण को ग्रहण करेगा, या जीविकोपार्जन के लिए जिसके अंदर जिस वर्ण की योग्यता होगी वह उसी वर्ण का कहलाएगा। इसके लिए प्रत्येक वर्ण के लिए उसके कर्तव्य कर्म भी निश्चित किए गए हैं। प्रत्येक वर्णस्थ व्यक्ति से यह अपेक्षा की गई है कि वह अपने वर्ण के लिए निर्धारित किए गए कर्तव्य कर्म का पालन आजीवन पूर्ण निष्ठा के साथ करता रहेगा। निर्धारित कर्मों का पालन न करने वाला व्यक्ति उस वर्ण का नहीं माना जायेगा।

जिन लोगों ने जन्म के आधार पर जाति की व्यवस्था का समर्थन किया है और मनु महाराज पर यह दोष लगाया है कि उन्होंने जन्म के आधार पर जाति की व्यवस्था की है, उन्होंने महर्षि मनु को न तो समझा है और न ही उनके साथ न्याय किया है। महर्षि मनु इस व्यवस्था के विरुद्ध थे कि किसी वर्ण-विशेष के कुल में जन्म लेने मात्र से ही कोई व्यक्ति उस वर्ण का माना जा सकता है। महर्षि मनु का मानना था कि कोई भी व्यक्ति तब तक अध्यापक नहीं हो सकता, जब तक कि वह अध्यापन कार्य न करता हो, इसी प्रकार कोई चिकित्सक बिना चिकित्सा के चिकित्सक नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार सेना बिना सैनिक, व्यापार बिना व्यापारी, श्रम कार्य बिना श्रमिक नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार के उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्ण के लिए निर्धारित कर्तव्य कर्मों को करने से ही कोई व्यक्ति अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार किसी वर्ण विशेष का कहा जा सकता है।

वास्तव में भारत की सामाजिक परम्पराओं में हर कदम पर कर्तव्य कर्म निश्चित किए गए हैं। हमारे देश में

अधिकारों को प्राथमिकता न देकर कर्तव्य निर्वाह में रुचि ली गई है और उन्हीं को प्राथमिकता दी गई है। वर्ण व्यवस्था की यदि हम गहनता से समीक्षा करें तो इस सारी व्यवस्था में भी हर कदम पर हमें हर वर्ण के लोगों के लिए निर्धारित किए गए कर्तव्य कर्म ही हमारा मार्गदर्शन करते हुए दिखाई देते हैं। इन निर्धारित कर्मों के किये बिना कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं माना जा सकता।

ब्राह्मण वर्ण के कर्तव्य कर्म

ब्राह्मण वर्ण के लोग अपने कर्तव्य कर्म के कारण ही सम्मानित स्थान प्राप्त करते थे। वह अपने शुद्ध चैतन्य ज्ञान से समाज का मार्गदर्शन करते थे। बदले में समाज उन्हें उनके इस शुद्ध चैतन्य ज्ञान से मिले मार्गदर्शन के कारण कृतज्ञतावश सम्मान प्रदान करता था। ब्राह्मण वर्ण का चयन करने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए निर्धारित कर्म निम्न प्रकार हैं ..

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजन तथा ।

दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥

भावार्थ-चारों वर्णों में ब्राह्मण वर्ण को प्रथम स्थान पर रखा गया। प्रथम स्थान का अभिप्राय यह नहीं है कि वह सर्वप्रमुख है या सर्वोच्च है और उसकी ही प्रधानता या सर्वोपरिता मानी गई है। इसका अभिप्राय केवल इतना है कि वह समकक्षों में प्रथम है अर्थात् मनुष्य मात्र में वह प्रथम स्थान रखता है। समकक्षों में प्रथम ब्राह्मण वर्ण के बारे में महर्षि मनु कहते हैं कि इसका प्रमुख कर्तव्य कर्म-विधिवत् पढ़ना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना तथा दान प्राप्त करना और सुपात्रों को दान देना है। जो कोई व्यक्ति या स्त्री ब्राह्मण वर्ण में होकर अपने इन कर्तव्य कर्मों के विपरीत आचरण करता है या इनमें रुचि नहीं लेता है तो वह ब्राह्मण या ब्राह्मणी नहीं कहा जा सकता।

ब्राह्मण के उपरोक्त कर्तव्य कर्म में शत-प्रतिशत लोक कल्याण का भाव निहित है। उसका कर्तव्य है कि वह पढ़े और पढ़ाये। पढ़ाने का कोई शुल्क लेने का विधान भी उसके लिए नहीं किया गया है। वह अपने ज्ञान को बांटता

रहे और 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की भावना के वशीभूत होकर लोगों का कल्याण करता रहे। वह यज्ञोत्तमयी जीवन जीने वाला हो। मोमबत्ती की भांति वह सबके अंतर्मन के दीप जलाने में सहायक हो। इसलिए लोगों के यहां यज्ञ करता हो और बड़े-बड़े यज्ञों का स्वयं भी आयोजन करता हो, जिससे उसके माध्यम से चौबीसों घंटे संसार में ऐसी ऊर्जा प्रवाहित होती रहे जो दूसरों का भला करती हो। प्रत्येक प्रकार के वायरस को, प्रत्येक प्रकार के प्रदूषण को समाप्त करने कराने में ब्राह्मण वर्ण के लोग ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सबसे प्रमुख कार्य वैचारिक प्रदूषण को समाप्त करना है, जिसे ब्राह्मण अपने उपदेशों से समाज के लोगों के भीतर से समाप्त करता था।

ब्राह्मण के लिए यह भी नहीं कहा गया है कि वह केवल दान ग्रहण करेगा और दान लेना ही उसका अधिकार होगा। इसके विपरीत उसके लिए यह व्यवस्था की गई है कि वह दान लेगा भी और समय आने पर सुपात्र को दान देगा भी। वैसे भी जिस व्यक्ति का कर्म यज्ञ करना और कराना है तो यज्ञ करने और कराने दोनों में दान देने और दान लेने का भाव अपने आप अंतर्निहित है। इसलिए जिन लोगों ने ब्राह्मण होकर अपने लिए यह व्यवस्था की है कि वे केवल पढ़ें पढ़ायेगे नहीं, यज्ञ करेगे यज्ञ करायेगे नहीं और दान लेंगे दान देंगे नहीं, उन्होंने सिद्धे के एक पक्ष को लोगों को दिखाया है। इन लोगों की ऐसी स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति के कारण ही वास्तविक ब्राह्मणों से भी समाज के कुछ लोगों ने घृणा करनी आरम्भ कर दी। अच्छा होता कि ब्राह्मण लोग अपने लिए निर्धारित किए गए कर्तव्य कर्मों के दोनों पक्षों को ही लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते रहते। जिनमें उनके लिए पढ़ाना, यज्ञ करना और दान देना भी अनिवार्य कर्तव्य के रूप में स्थापित किया गया है। वास्तव में ब्राह्मण का कार्य मनुष्य के सबसे प्रमुख अज्ञान नाम के शत्रु से लड़ना और उसे समाप्त करना है।

- संकलित

एक प्रेरक प्रसंग

रिश्तों की कमाई

बात आठ-दस साल पहले की है। मैं अपने एक मित्र का पासपोर्ट बनवाने के लिए दिल्ली के पासपोर्ट ऑफिस गया था। उन दिनों इन्टरनेट पर फॉर्म भरने की सुविधा नहीं थी। पासपोर्ट दफ्तर में दलालों का बोलबाला था और खुलेआम दलाल जैसे लेकर पासपोर्ट के फॉर्म बेचने से लेकर उसे भरवाने, जमा करवाने और पासपोर्ट बनवाने का काम करते थे।

मेरे मित्र को किसी कारण से पासपोर्ट की जल्दी थी, लेकिन दलालों के दलदल में फँसना नहीं चाहते थे।

हम पासपोर्ट दफ्तर पहुँच गये, लाइन में लगकर हमने पासपोर्ट का तत्काल फॉर्म भी ले लिया। पूरा फॉर्म भर लिया। इस चक्कर में कई घण्टे निकल चुके थे और अब हमें किसी तरह पासपोर्ट की फीस जमा करानी थी।

हम लाइन में खड़े हुए, लेकिन जैसे ही हमारा नम्बर आया, बाबू ने खिड़की बन्द कर दी और कहा कि समय खत्म हो चुका है, अब कल आइयेगा।

मैंने उससे मिन्नतें की उससे कहा कि आज पूरा दिन हमने खर्च किया है और बस, अब केवल फीस जमा कराने की बात रह गई है, कृपया फीस ले लीजिये।

बाबू बिगड़ गया। कहने लगा, 'आपने पूरा दिन खर्च कर दिया तो उसके लिये मैं जिम्मेदार हूँ क्या? अरे! सरकार ज्यादा लोगों को कामपर लगाये। मैं तो सुबह से अपना काम ही कर रहा हूँ।'

मैंने बहुत अनुरोध किया, पर वह नहीं माना। उसने कहा कि बस, दो बजे तक का ही समय होता है, दो बज गये। अब कुछ नहीं हो सकता।

मैं समझ रहा था कि सुबह से वह दलालों का काम कर रहा था, लेकिन जैसे ही बिना दलालवाला काम आया, उसने बहाने बनाने शुरू कर दिये हैं, पर हम भी अड़े हुए थे कि बिना अपने पदका इस्तेमाल किये और बिना ऊपर से जैसे खिलाये इस काम को अंजाम देना है।

मैं ये भी समझ गया था कि अब कल अगर आये तो कलका भी पूरा दिन निकल ही जायेगा, क्योंकि दलाल हर

खिड़की को घेरकर खड़े रहते हैं और आम आदमी वहाँ तक पहुँचने में बिलबिला उठता है।

खैर, मेरा मित्र बहुत मायूस हुआ और उसने कहा कि चलो, अब कल आयेंगे।

मैंने उसे रोका। कहा कि रूको, एक और कोशिश करता हूँ।

बाबू अपना थैला लेकर उठ चुका था। मैंने कुछ कहा नहीं, चुपचाप उसके पीछे हो लिया। वह उसी दफ्तर में तीसरी या चौथी मंजिल पर बनी एक कैटीन में गया, वहाँ उसने अपने थैले से लंच बॉक्स निकाला और धीरे-धीरे अकेला खाने लगा।

मैं उसके सामने की बैंच पर जाकर बैठ गया। उसने मेरी ओर देखा और बुरा सा मुँह बनाया। मैं उसकी ओर देखकर मुस्कराया। उससे मैंने पुछा कि रोज घर से खाना लाते हो?

उसने अनमने से कहा कि हाँ, रोज घर से लाता हूँ। मैंने कहा कि तुम्हारे पास तो बहुत काम है, रोज बहुत से नये-नये लोगों से मिलते होंगे?

वह पता नहीं क्या समझा और कहने लगा कि हाँ, मैं तो एक से एक बड़े अधिकारियों से मिलता हूँ।

आई.ए.एस., आई.पी.एस. विधायक और न जाने कौन कौन रोज वहाँ आते हैं, मेरी कुर्सी के सामने बड़े बड़े लोग इंतजार करते हैं।

मैंने बहुत गौर से देखा, ऐसा कहते हुए उसके चेहरे पर अहं का भाव था। मैं चुपचाप उसे सुनता रहा।

फिर मैंने उससे पूछा कि एक रोटी तुम्हारी प्लेट से मैं भी खा लूँ। वह समझ नहीं पाया कि मैं क्या कह रहा हूँ। उसने बस 'हाँ' में सिर हिला दिया।

मैंने एक रोटी उसकी प्लेट से उठा ली, सब्जी के साथ खाने लगा।

वह चुपचाप मुझे देखता रहा। मैंने उसके खाने की तारीफ की और कहा कि तुम्हारी पत्नी बहुत ही स्वादिष्ट खाना पकाती है। वह चुप रहा।

मैंने फिर उसे कुरेदा। तुम बहुत महत्वपूर्ण सीट पर बैठे हो। बड़े-बड़े लोग तुम्हारे पास आते हैं। तो क्या तुम अपनी कुर्सी की इज्जत करते हो?

अब वह चौंका। उसने मेरी ओर देखकर पूछा कि इज्जत? मतलब?

मैंने कहा कि तुम बहुत भाग्यशाली हो, तुम्हें इतनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है, तुम न जाने कितने बड़े बड़े अफसरों से डील करते हो, लेकिन तुम अपने पद की इज्जत नहीं करते।

उसने मुझसे पूछा कि ऐसा कैसे कहा आपने? मैंने कहा कि जो काम दिया गया है, उसकी इज्जत करते तो तुम इस तरह रूखे व्यवहार वाले नहीं होते।

देखो, तुम्हारा कोई दोस्त भी नहीं है। तुम दफ्तर कैंटीन में अकेले खाना खाते हो, अपनी कुर्सी पर भी मायूस होकर बैठे रहते हो, लोगों का होता हुआ काम पूरा करने की जगह अटकाने की कोशिश करते हो।

मान लो, कोई एकदम दो बजे ही तुम्हारे काउण्टर पर पहुँचा, तो तुमने इस बात का लिहाज तक नहीं किया कि वह सुबह से लाइन में खड़ा रहा होगा और तुमने खिड़की बंद कर दी। जब मैंने तुमसे अनुरोध किया तो तुमने कहा कि सरकार से कहो कि ज्यादा लोगों को बहाल करें।

मान लो मैं सरकार से कहकर और लोग बहाल करा लूँ, तो तुम्हारी अहमियत घट नहीं जायेगी? हो सकता है तुमसे ये काम ही ले लिया जाये। फिर तुम कैसे आई.ए.एस., आई.पी.एस. और विधायक से मिलोगे?

भगवान ने तुम्हें एक मौका दिया है रिश्ते बनाने के लिए, लेकिन अपना दुर्भाग्य देखो, तुम इसका लाभ उठाने की जगह रिश्ते बिगाड़ रहे हो।

मेरा क्या है, कल भी आ जाऊँगा, परसों भी आ जाऊँगा। ऐसा तो है नहीं कि आज नहीं काम हुआ तो कभी नहीं होगा। तुम नहीं करोगे तो कोई और बाबू कल करेगा।

पर तुम्हारे पास तो मौका था किसी को अपना अहसानमन्द बनाने का। तुम उससे चूक गये। वह खाना

छोड़कर मेरी बातें सुनने लगा था।

मैंने कहा कि पैसे तो कमा लोगे, लेकिन रिश्ते नहीं कमाये तो सब बेकार है। क्या करोगे पैसों का? अपना व्यवहार ठीक नहीं रखोगे तो तुम्हारे घरवाले भी तुमसे दुखी रहेंगे। यार-दोस्त तो नहीं हैं, ये तो मैं देख ही चुका हूँ। मुझे देखो, अपने दफ्तर में कभी अकेला खाना नहीं खाता।

यहाँ भी भूख लगी तो तुम्हारे साथ खाना खाने आ गया। अरे! अकेले खाना भी कोई जिन्दगी है? मेरी बात सुनकर वह रूआँसा हो गया। उसने कहा कि आपने बात सही कही है साहब। मैं अकेला हूँ। पत्नी झगड़ा करके मायके चली गयी हैं। बच्चे भी मुझे पसन्द नहीं करते। माँ है, वह भी कुछ ज्यादा बात नहीं करती। सुबह चार-पाँच रोटी बनाकर दे देती है और मैं तनहा खाना खाता हूँ। रात में घर जाने का भी मन नहीं करता। समझ में नहीं आता कि गड़बड़ी कहाँ है?

मैंने हौले से कहा कि खुद को लोगों से जोड़ो। किसी को मदद कर सकते हो तो करो। देखो, मैं यहाँ अपने दोस्त के पासपोर्ट के लिये आया हूँ। मेरे पास में पासपोर्ट है।

मैंने दोस्त की खातिर तुम्हारी मिन्नते की, निःस्वार्थ भाव से। इसलिये मेरे पास दोस्त है, तुम्हारे पास नहीं है।

वह उठा और उसने मुझसे कहा कि आप मेरी खिड़की पर पहुँचो। मैं आज ही फॉर्म जमा करूँगा।

मैं नीचे गया, उसने फॉर्म जमा कर लिया, फीस ले ली और हफ्तेभर मे पासपोर्ट बन गया।

बाबू ने मुझसे मेरा नम्बर माँगा, मैंने अपना मोबाइल नम्बर उसे दे दिया और चला आया।

कल दीवाली पर मेरे पास बहुत-से फोन आये। मैंने करीब-करीब सारे नम्बर उठाये। सबको हैप्पी दीवाली बोला।

उसी में एक नम्बर से फोन आया, 'रविन्द्र कुमार चौधरी बोल रहा हूँ साहब।'

मैं एकदम नहीं पहचान सका। उसने कहा कि कई साल पहले आप हमारे पास अपने किसी दोस्त के पासपोर्ट के लिये आये थे और आपने मेरे साथ रोटी भी खायी थी।

आपने कहा था कि पैसे की जगह रिश्ते बनाओ। मुझे एकदम याद आ गया। मैंने कहा, हाँ ! जी चौधरी साहब, कैसे हैं ?

उसने खुश होकर कहा, साहब! आप उस दिन चले गये, फिर मैं बहुत सोचता रहा। मुझे लगा कि पैसे तो सचमुच बहुत लोग दे जाते हैं, लेकिन साथ खाना खाने वाला कोई नहीं मिलता। सब अपने में व्यस्त है। साहब! मैं अगले ही दिन पत्नी के मायके गया, बहुत मित्रतें कर उसे घर लाया। वह मान ही नहीं रही थी।

वह खाना खाने बैठी तो मैंने उसकी प्लेट से एक रोटी उठा ली, कहा कि साथ खिलाओगी ? वह हैरान थी। रोने लगी, मेरे साथ चली आयी।

साहब! अब मैं पैसे नहीं कमाता। रिश्ते कमाता हूँ। जो आता है, उसका काम कर देता हूँ।

साहब! आज आपको हैप्पी दीवाली बोलने के लिये फोन किया है।

अगले महीने बिटिया की शादी है, आपको आना है। अपना पता भेज दीजियेगा। मैं और मेरी पत्नी आपके पास आयेंगे।

मेरी पत्नी ने मुझसे पूछा था कि ये पासपोर्ट दफ्तर में रिश्ते कमाना कहाँ से सीखे ?

तो मैंने पूरी कहानी बताई थी। आप किसी से नहीं मिले, लेकिन मेरे घर में आपने रिश्ता जोड़ लिया है।

सब आपको जानते हैं, बहुत दिनों से फोन करने की सोचता था, लेकिन हिम्मत नहीं होती थी।

आज दीवाली का मौका देख करके फोन कर रहा हूँ। शादी में आपको आना है, बिटिया को आशीर्वाद देने। रिश्ता जोड़ा है आपने। मुझे यकीन है आप आयेंगे।

वह बोलता जा रहा था, मैं सुनता जा रहा था। सोचा नहीं था कि सचमुच उसकी जिन्दगी में भी पैसों पर रिश्ता भारी पड़ेगा।

लेकिन मेरा कहा सच साबित हुआ।

‘आदमी भावनाओं से संचालित होता है, कारण से नहीं। कारण से तो मशीनें चला करती है।’

जिन्दगी में किसी का साथ ही काफी है,

कन्धे पर रखा हुआ हाथ ही काफी है,

दूर हो या पास, क्या फर्क पड़ता है,

क्योंकि अनमोल रिश्तों का तो बस अहसास ही काफी है।

- कल्याण से साभार.....

मर्यादा के त्याग से अपमान

एक जगह बहुत से मोरपंख पड़े हुए थे। एक कौए ने उन्हें देखकर मन ही मन सोचा.. यदि मैं इन मोर के पंखों को अपने पंखों पर लगा लूँ, तो मैं भी मोर के समान ही सुन्दर दिखने लगूँगा। यह सोचकर कौए ने उन्हें अपने पंखों पर लगा लिया और अन्य कौओं के पास जाकर कहने लगा .. तुम लोग बड़े नीच और कुरूप हो। मैं अब तुम लोगों के साथ नहीं रहूँगा। यह कह कर वह मोरों की टोली में सम्मिलित होने चला।

मोरों ने उसे देखते ही पहचान लिया कि यह कौआ है। इसके बाद सभी मोरों ने मिलकर उसके पंखों से एक एक मोर पंख नोच लिए और उसे अत्यन्त मूर्ख ठहराकर उस पर प्रहार करने लगे। कौआ परेशान हो गया और उसने भागकर अपनी जान बचाई।

इसके बाद वह फिर अपनी टोली में शामिल होने गया। इस पर दूसरे कौओं ने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा, “अरे मूर्ख, तू मोरों के पंख पाकर अहंकार में उन्मत्त हो हम लोगों से घृणा करके और गालियाँ देते हुए मोरों के दल में शामिल होने गया था, वहाँ से अपमानित होकर अब तू फिर हमारी टोली में मिलने आया है। तू तो बड़ा ही नीच और निर्लज्ज है।”

इस प्रकार उसका तिरस्कार करते हुए उन लोगों ने उस मूर्ख कौवे को भगा दिया।

मनुष्य यदि दूसरों की नकल का प्रयास छोड़कर, अपने गुण .. अवगुण जानकर अपनी अवस्था से सन्तुष्ट रहे, अपनी मर्यादा में रहे तो उसे किसी के सामने अपमानित नहीं होना पड़ता। जो अपनों का अपमान करता है, उसे अपनों और परायों .. दोनों से अपमानित होना पड़ता है।

स्वस्थ जीवन के लिए उपवास का महत्व



प्राकृतिक चिकित्सा के चिकित्सकीय उपकरणों में मिट्टी, पानी, भाप, धूप, हवा आदि के साथ ही उपवास भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है। शरीर में विजातीय द्रव्यों का एकत्रीकरण मूलतः अनुचित खानपान के कारण ही होता है। इन विजातीय द्रव्यों को निकाल कर शरीर को रोगमुक्त करने के लिये उपवास एक सशक्त माध्यम है। प्राकृतिक चिकित्सकों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि उपवास से घातक रोग भी दूर किये जा सकते हैं।

वस्तुतः रुग्णावस्था में प्रकृति ही हमें उपवास की प्रेरणा देती है। रोग की तीव्रता होने पर तनिक भी भूख नहीं लगती, परन्तु हम प्रकृति से इतने दूर हो गये हैं कि उसकी आवाज ही नहीं सुनना चाहते। रोग की अवस्था में खाने की तनिक भी इच्छा न होते हुए भी पेट में कुछ न कुछ ठूसते रहते हैं, इस गलत फहमी में कि कमजोरी न आए, परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि शरीर में एकत्र हुए विजातीय पदार्थों को निकालने के लिये ही प्रकृति जुकाम, बुखार, दस्त आदि रोगों के माध्यम से अन्दर की गन्दगी को शरीर के बाहर निकालती है। ऐसे समय में कुछ न कुछ खाते रहना विसर्जन की प्राकृतिक क्रिया में अवरोध पहुँचाना है। इन विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में केवल उपवास ही सहायक होता है।

वर्तमान समय में जब लोग खाने के रोग से पीड़ित हैं, असंयम का बोलबाला है, दिन में कई बार खाना एक फैशन बन गया है, अप्राकृतिक, अखाद्य और गरिष्ठ वस्तुओं का प्रयोग बढ़ गया है, पाचन क्रिया अधिक पाचन श्रम के कारण निर्बल हो गई है, तब रोग पीड़ित मानवता के लिये उपवास एक आवश्यक अंग बन गया है।

उपवास कब और कैसे :-

साधारणतया उपवास सभी कर सकते हैं और सबको ही उपवास लाभप्रद हो सकता है, किन्तु किसी भी प्रकार की बीमारी में तो उपवास ही रामबाण है। सब प्रकार के ज्वर-

बुखार, गले की सूजन, खाँसी, जुकाम, सर्दी पायरिया, हिस्टीरिया, मानसिक वायुरोग, सिरदर्द, दस्त, जी मिचलाना आदि सभी रोगों में उपवास बहुत लाभप्रद होता है।

महात्मा गांधी ने भी लिखा है - "डा. मित्रों से माफी मांगते हुए, किन्तु अपने सम्पूर्ण अनुभवों के और अपने जैसे दूसरों के अनुभवों के आधार पर मैं बिना किसी हिचकिचाहट के यह कहूँगा कि यदि निम्नलिखित शिकायत हो तो अवश्य ही उपवास किया जाए :-

कब्ज में, रक्त की कमी में, बदहजमी में, सिर दर्द में, वायु के दर्द में, जोड़ों के दर्द में, भारीपन मालूम होने पर, उदासी और चिन्ता में, बेहद खुशी में। यदि इन अवसरों पर उपवास किया जाए, तो डाक्टर के नुस्खों और पेटेन्ट दवाओं से बचत हो जाएगी।"

उपवास कितने दिन का किया जाए यह इस बात पर निर्भर करता है कि रोग कितना पुराना है। नये अर्थात् तीव्र रोगों में दो तीन दिन का उपवास ठीक है जबकि पुराने रोगों में लम्बे उपवास की आवश्यकता हो सकती है। लम्बा उपवास किसी प्राकृतिक चिकित्सक की देखरेख में ही किया जाना चाहिए। छोटे उपवास के बारे में चिकित्सकों की राय है कि स्वस्थ व्यक्ति को भी हफ्ते पन्द्रह दिनों में उपवास करते रहना चाहिए जिससे पाचन तंत्र को आराम मिल सके व विजातीय पदार्थ समय समय पर निकलते रहें। वैसे तो हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच समझ कर साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक उपवास की व्यवस्था धार्मिकता का पुट देकर की हुई है, किन्तु इसमें भी विकृति आ गई और उपवास में शाकाहार व फलाहार सम्मिलित कर पाचन तंत्र को पूर्ण आराम दिया जाने में बाधा उत्पन्न कर दी।

उपवास में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। उपवास से पहले ठूस ठूस कर पेट नहीं भरना चाहिए। पानी लगातार पीते रहना चाहिए, नींबू पानी पियें तो सफाई शीघ्र होगी। उपवास के दिनों में दोनों समय एनीमा लेना भी आवश्यक है, ताकि आँतों में रुका हुआ मल बाहर आ सके। एनीमा से पूर्व आधा घंटे तक पेडू पर मिट्टी की पट्टी रखने से

शीघ्र लाभ मिलता है। एनीमा के बाद 15-20 मिनट तक साफ हवा में घूमना चाहिए।

जैसा पूर्व में कहा गया कि लम्बा उपवास किसी योग्य एवं अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक की देखरेख में किया जाना चाहिए। तीन दिन से अधिक लम्बे उपवास में पहले दो दिन केवल फलाहार या रसाहार पर रहना चाहिए, फिर चिकित्सक के निर्देशानुसार उपवास करना चाहिए। उपवास की समाप्ति पर सीधे भोजन पर नहीं आना है, बल्कि पहले दो दिन केवल रसाहार फिर अगले तीन दिन रसाहार एवं फलाहार तथा इसके पश्चात दूध व उबली सब्जी और फिर साधारण भोजन पर आना चाहिए।

लम्बे उपवास के सम्बन्ध में लेखक का स्वयं का व्यक्तिगत अनुभव उल्लेखनीय है। आरोग्य मन्दिर गोरखपुर के तत्कालीन एशिया विख्यात प्राकृतिक चिकित्सक श्री विट्टलदास मोदी के कुशल निर्देशन में लेखक ने 15 दिन का लम्बा उपवास कर तन मन में नव चेतना संचार की अनुभूति की। यह बात काफी पुरानी जून 1958 की है, जब स्वास्थ्य लाभ हेतु मैं वहाँ गया था। लम्बे उपवास में चिकित्सक कभी यह नहीं कहता है कि आपको दस दिन या पन्द्रह दिन का उपवास करना है। यदि पहले से बता दिया जाए तो आप हिम्मतपस्त हो जाएंगे। सबसे पहले उपवास सम्बन्धी साहित्य पढ़ने को दिया गया जिससे उपवास के लिये मानसिक रूप से तैयार किया जा सके। प्रारम्भ में तीन दिन के उपवास के लिये कहा गया। उपवास काल में दोनों समय एनीमा लेना आवश्यक था। तीन दिन बाद चिकित्सक को बताया गया कि कुछ भी न खाने पर भी एनीमा के बाद मल की कुछ मात्रा निकलती है। इस पर दो दिन के लिए उपवास और बढ़ाया गया। इस प्रकार दो दिन, एक दिन करते करते चौदह दिन तक उपवास चलता रहा क्योंकि आँतों में पुराना चिपका हुआ मल गाँठों के रूप में निकलता रहा। जब चौदहवें दिन एनीमा में प्लेन पानी निकला तब चिकित्सक ने एक दिन और उपवास बढ़ाया। इस प्रकार पूरे पन्द्रह दिन का उपवास बिना किसी विशेष कठिनाई के पूरा हुआ।

जैसा पूर्व में बताया गया कि लम्बे उपवास के बाद एकदम अन्न पर नहीं आना चाहिए, पहले तीन दिन केवल

रसाहार, अगले तीन दिन दूध तथा फलों का रस तथा अगले तीन दिन बिना मिर्च मसाले की उबली हुई हरी सब्जी, मौसमी फल व दूध दिया गया। तब कहीं जाकर नौ दिन बाद दलिया, खिचड़ी के रूप में अन्न प्रारम्भ किया गया।

उपवास से कुछ अन्य लाभ

1. **इम्यून सिस्टम मजबूत होता है** - उपवास रखने से शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है। इस कारण से शरीर में बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। इसके अलावा न्यूरोलॉजिया, कोलाइटिस, थकान, कब्ज और सिरदर्द होने का खतरा काफी कम हो जाता है।
2. **पाचन तंत्र के लिए बेहतर** - उपवास का हमारे पाचन तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। महीने में कम से कम तीन बार उपवास रखने से हमारी पाचन क्रिया दुरुस्त होती है। उपवास के दौरान हमारे पेट और लीवर को काफी आराम मिलता है।
3. **याददास्त बढ़ती है** - आपके दिमाग की क्षमता को बढ़ाने में भी उपवास काफी कारगर है। अगर आपका खानपान अच्छा है और आप सप्ताह में एक बार उपवास रखते हैं तो इससे आपकी सोचने की क्षमता और याददास्त में तेजी आएगी। इसके अलावा इससे हमारे दिमाग में प्रोटीन काफी मात्रा में बढ़ता है। यह प्रोटीन हमारे दिमाग की कार्यशैली को नियन्त्रित करता है। इससे दिमाग शान्त और स्वस्थ रहता है।
4. **वजन में आती है कमी** - वजन कम करने की इच्छा रखने वालों के लिए उपवास अच्छा विकल्प है। उपवास से शरीर में फैट कम करने में मदद मिलती है। जो लोग ज्यादा खाने के आदती होते हैं उन्हें उपवास जरूर रखना चाहिए। उपवास से भूख भी नियन्त्रित रहती है, जिससे वजन बढ़ने की संभावनाओं पर विराम लग जाता है। उपवास मानसिक शान्ति का सबसे बेहतर विकल्प होता है। संक्षेप में कहें तो स्वस्थ जीवन के लिए उपवास अत्यन्त लाभकारी है, रोग हो तब भी और रोग न हो तब भी।

शिवराज शर्मा, भजन गंज, अजमेर

जनवरी-मार्च अंक के आगे... असफलता को सफलता में बदलें

व्यवहार में कटुता - मनुष्य एक सामाजिक व्यक्ति है और प्रत्येक मनुष्य शान्तिपूर्वक रहना चाहता है। अतः इसके लिए दूसरों के साथ उसके सम्बन्ध मधुर होने चाहिए। यदि हमारे व्यवहार में कटुता होगी, तो उसका प्रभाव हमारे जीवन पर भी पड़ेगा। मन में अशान्ति रहने पर हमारी कार्यकुशलता कम हो जाती है और ऐसे में असफलता स्वाभाविक है। वर्तमान युग सहयोग का युग है। आज हमें प्रत्येक कार्य सम्पन्न करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। यदि हमारा व्यवहार रुक्ष हो, तो हमारे सम्बन्ध दूसरों से शीघ्र ही टूट जाते हैं और इसके कारण हमारे सहयोगी हमसे दूर चले जाते हैं। इससे हम स्वयं भी तनाव में आ जाते हैं और सहयोग न पाने के कारण किसी भी कार्य को सम्पन्न करना दुष्कर हो जाता है। यदि हमारे व्यवहार में कटुता होगी, तो हम टीम-वर्क (सामूहिक कार्य) नहीं कर सकेंगे। कभी-कभी व्यवहार की कटुता के कारण सफलता भी असफलता में और व्यवहार में मधुरता के कारण असफलता सफलता में बदल जाती है।

उत्साह का अभाव - किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए हमारे अंदर उत्साह का रहना अत्यंत आवश्यक है। एक निरुत्साही व्यक्ति का सफल होना असंभव होता है। कभी-कभी असफलता मिलने के कारण व्यक्ति निरुत्साहित हो जाता है। उत्साह का अभाव मन में नकारात्मक विचार लाता है। कभी-कभी नकारात्मक सोच हमें निरुत्साहित कर देते हैं। पर इन सभी दशाओं में उत्साह का अभाव सफलता की ओर नहीं जाता। किसी कार्य को प्रारम्भ करने के बाद यदि हममें उत्साह न रहे, तो हम उस कार्य को सफलतापूर्वक नहीं कर सकते। वहीं उत्साह उस ईंधन की भाँति होता है, जो उस कार्य को निरन्तर करते रहने की प्रेरणा देते रहता है। उत्साह वह दीपक है, जो मसाल जलाने का कार्य कर सकता है। युद्ध से पूर्व सेनापति सैनिकों को उत्साहित करने वाले भाषण देते हैं, जिससे सैनिकों का रक्त और भी गर्म हो जाता है और तब वे मृत्यु से खेलने के लिए भी तत्पर हो जाते हैं। इस प्रकार उत्साह

सफलता प्राप्त करने की महत्त्वपूर्ण इकाई है, जिसे हमें बनाए रखना चाहिए।

समय से ताल मिलाकर चलना - किन्हीं व्यवसायियों का पीढ़ियों से घड़ी का बड़ा व्यवसाय था। वे सभी सुविधासम्पन्न जीवनयापन कर रहे थे। ऐसे समय में मोबाइल का आविष्कार होता है। लोगों की रुचि धीरे-धीरे मोबाइल की ओर बढ़ने लगती है, पर तब भी घड़ी के व्यवसायी निश्चिन्त होकर बैठे रहे। धीरे-धीरे एक ऐसा समय आ जाता है, जब वे कीमती से कीमती घड़ियाँ लेकर बैठे रहते हैं, पर कोई खरीददार नहीं आता। वहीं दूसरी ओर समय की माँग को समझते हुए छोटे व्यवसायी मोबाइल का व्यवसाय करना प्रारम्भ करते हैं और दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करते हैं।

जब कम्प्यूटर का आगमन हुआ, तब बहुत-से विद्यार्थियों ने इसकी अवहेलना की, पर भविष्य में जब उन्हें कार्य खोजना पड़ा, तो कम्प्यूटर न जानने के कारण वे पीछे रह गए। अतः हमें समय की माँग के अनुसार स्वयं को परिवर्तित करना चाहिए। यदि हमें प्रगति करनी हो, तो हमें समय से ताल मिलाकर चलना चाहिए।

बहाना बनाना - यह एक ऐसी बीमारी है, जिसके कारण हम अपनी असफलता को स्वयं आमन्त्रित कर लेते हैं। बहाने बनाते रहने से कभी कोई कार्य प्रारम्भ नहीं होता और यदि प्रारम्भ हो भी गया, तो बहाने बनाने के कारण धीरे-धीरे उसमें शिथिलता आने लगती है, इस प्रकार उस कार्य में हमें सफलता नहीं मिलती। वस्तुतः हमें शुभ कार्यों को टालना नहीं चाहिए। कबीरदास जी बहाना बनाने वालों को कहते हैं कि जो कल करना है, उसे आज करो, जो आज करना है, उसे अभी करो, कुछ ही समय में प्रलय हो जाएगा फिर तुम क्या कर पाओगे

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

धैर्य का अभाव - हरेश नामक युवक अपने गाँव से शहर जा रहा था। वह मार्ग में एक स्थान पर विश्राम के लिए बैठा

था। वहाँ एक व्यक्ति कुछ पत्ते तोड़ रहा था। हरेश ने उससे पूछा कि वह इनका क्या करेगा। तब उस व्यक्ति ने बताया कि यह औषधि है और इस औषधि के द्वारा 15 रोगों की चिकित्सा की जा सकती है। यदि वह सीखना चाहे, तो वह उसे सिखाएगा। वहाँ कुछ दिन रहकर हरेश कुछ औषधियों के विषय में जान गया। एक बार उस सिखाने वाले व्यक्ति ने हरेश से कहा कि प्रत्येक वृक्ष में औषधीय गुण होते हैं। इतना सुनते ही अब उसे लगने लगा कि उसे आयुर्वेद विद्या आ गई है। अब हरेश वहाँ से अपने गाँव वापस आ गया और गाँव वालों से यह कहने लगा कि उसने आयुर्वेद सीख ली है। गाँव वाले उसके पास जाने लगे और कुछ लोग स्वस्थ भी हुए। अब हरेश मन ही मन सोचने लगा कि यदि वह उस व्यक्ति के पास ही रहता, तो उसे बाकी विद्या सीखने में सारी उम्र लग जाती। अब वह स्वयं जंगल जाकर वृक्षों के पत्ते लाकर औषधि बनाने लगा। एक दिन उसके द्वारा निर्मित औषधि से कुछ लोगों की मृत्यु हो गई। तब गाँव के लोग उस पर क्रोधित हो गए और उसे भी वही औषधि खिलाई गई, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। यदि स्थिति का विश्लेषण करें, तो हरेश की मृत्यु का कारण वे पत्ते नहीं थे, जिसे उसे खिलाया गया था, बल्कि उसके धैर्य के अभाव के कारण ही उसकी मृत्यु हुई थी। क्योंकि धैर्य के अभाव के कारण उसने वह विद्या अच्छे ढंग से नहीं सीखी थी। इसी प्रकार हमारे जीवन में भी धैर्य के अभाव के कारण हमारी असफलता होती है। जब हम किसी कार्य को सीखने या पूर्ण करने का धैर्य खो बैठते हैं, तब हमारे मन में चंचलता आ जाती है। तत्पश्चात् हम अपने मन की पूरी शक्ति का प्रयोग नहीं कर पाते और असफल हो जाते हैं।

सरल मार्ग चुनना – सुविधाओं में रहकर कभी तपस्या नहीं होती। यदि हमें सफल बनना है, तो परिश्रम तो करना ही पड़ेगा। यदि गगनचुंबी इमारत बनानी हो, तो उसके लिए वैसे ही गहरे और मजबूत नींव की आवश्यकता होती है। जैसा हमारा लक्ष्य होगा उसके अनुसार हमें वैसा परिश्रम करना पड़ेगा और उसका मार्ग भी वैसा ही कठिन होगा।

कुछ विद्यार्थी ऐसे विषयों का चयन करते हैं, जिसे वे

परीक्षा के एक दिन पहले पढ़कर उत्तीर्ण कर सकें। परन्तु इस प्रकार की पढ़ाई से उन्हें स्नातक की उपाधि तो मिल जाती है, पर वे बेरोजगार बैठे रहते हैं। तत्पश्चात् वे अपनी बेरोजगारी का कारण प्रशासन तथा भ्रष्टाचार के सर मढ़ते हैं। पर वास्तविकता यह होती है कि उन्होंने सरल मार्ग चुना था तथा परीक्षाओं के अनुरूप कठिन परिश्रम भी नहीं किया था। सरल मार्ग चयन करने के कारण उस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा अत्यधिक होती है, क्योंकि वहाँ लोगों की संख्या बहुत अधिक होती है। सरल मार्ग के द्वारा हम सफलता की ओर नहीं जा सकते। सफलता के लिए तो हमें संघर्ष और परिश्रम करना ही पड़ता है।

असफलता का भय – एक युवक और एक संन्यासी के बीच बातचीत कुछ इस प्रकार चल रही थी –

संन्यासी – तुम जीवन में क्या करना चाहते हो ?

युवक – संन्यासी बनना चाहता हूँ।

संन्यासी – इसके लिए तो तुम्हें घर-द्वार छोड़कर ब्रह्मचारी का जीवन व्यतीत करना होगा।

युवक – हाँ।

संन्यासी – तो तुम प्रयास क्यों नहीं करते ?

युवक – मुझे भय है कि कहीं मैं असफल न हो जाऊँ।

कुछ लोगों के असफल होने का कारण उनका असफलता के भय से प्रयास न करना होता है। यदि हमने प्रयास ही नहीं किया तो हम असफल होंगे ही। पर यदि हमने प्रयास किया, तो सम्भवतः हम सफल हो सकते हैं। कभी-कभी कुछ लोग प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग नहीं लेते क्योंकि उन्हें डर होता है कि यदि वे उत्तीर्ण न हुए तो समाज में उनका सम्मान नहीं रहेगा। वे अपनी वास्तविक स्थिति को छिपाने के लिए प्रतिस्पर्धाओं और परीक्षाओं से दूर भागते रहते हैं। पर इस प्रकार के पलायन के द्वारा कभी भी सफलता नहीं मिल सकती।

व्यक्तित्व में कमी – स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, 'जब हमें असफलता मिलती है, तो हम दूसरों को कोसते हैं। ज्यों ही मुझे असफलता मिलती है, त्यों ही मैं कह उठता हूँ कि अमुक-अमुक मेरी असफलता के कारण हैं। असफलता

आने पर मनुष्य अपनी कमजोरी और अपने दोष को स्वीकार करना नहीं चाहता। प्रत्येक मनुष्य यह दिखलाने की कोशिश करता है कि वह निर्दोष है और सारा दोष वह किसी मनुष्य पर, किसी वस्तु पर और अन्ततः दुर्भाग्य पर मढ़ना चाहता है। जब घर का प्रमुख कर्ता असफल हो, तो उसे स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए कि कुछ लोग अपना घर किस प्रकार इतनी अच्छी तरह चला सकते हैं तथा दूसरे क्यों नहीं। तब तुम्हें पता चलेगा कि यह अन्तर उस मनुष्य के ही कारण है – उस मनुष्य के व्यक्तित्व के कारण ही यह अंतर पड़ता है।’

सफलता के उपाय

अपने कार्य से प्रेम – वह कार्य जिससे हम प्रेम करते हैं, उसमें हमारा मन स्वतः ही लग जाता है। अतः उस कार्य में हमारी क्षमता अत्यधिक दिखाई देती है। जिस कार्य के प्रति हमारा प्रेम होता है, उस कार्य को करने में हमें कभी बोझ या भार का अनुभव नहीं होता। जिस व्यक्ति को संगीत में रुचि है, वह व्यक्ति पूरे दिन संगीत का अभ्यास कर सकता है, पर फिर भी उसे थकान नहीं लगती। वैज्ञानिक अपने अनुसंधान कार्य में कई-कई दिन व्यतीत कर देते हैं, यहाँ तक कि उन्हें अपनी दिनचर्या का भी भान नहीं रहता। पर इस कार्य में उन्हें आत्मसन्तुष्टि मिलती है, थकान नहीं। एक सिपाही अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि भी हँसते-हँसते दे देता है, क्योंकि उसे अपने राष्ट्र से प्रेम होता है और राष्ट्र की सुरक्षा का कार्य उसे प्राणों से भी प्रिय होता है। जिन विद्यार्थियों को जिस विषय में रुचि होती है, उसका अध्ययन वे स्वयं करने लगते हैं, बल्कि उन विषयों में वे कई बार नये आविष्कार भी कर लेते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि हमें अपने कार्य से प्रेम हो, तो हम सफलता की ओर अवश्य अग्रसर होंगे।

मन शान्त रखें – शान्त मन में सोचने-विचारने की क्षमता अधिक होती है। वह आने वाली समस्याओं से भी जूझने के लिए प्रस्तुत होता है। वहीं अशान्त व्यक्ति सामान्य-सी

असुविधाओं पर बेचैन हो जाता है और गलत निर्णय ले बैठता है। शान्त मन जीवन और जीविकोपार्जन दोनों को संतुलित रखती है। शान्ति मनुष्य का वास्तविक स्वरूप है और इसकी खोज ही उसका जीवन है। यदि वह शान्त है, तो वह अपने वास्तविक स्वरूप के अत्यन्त निकट है। कभी-कभी व्यक्ति धन के लिए इतना दौड़ता है कि वह मशीन की भाँति हो जाता है। जीवन के अन्त में उसका मन अत्यन्त चंचल हो जाता है और वह स्वयं को असफल मानने लगता है। मन के अविचलित होने पर वह बड़े-बड़े आघातों से भी वैसे ही निकल जाता है, जैसे समुद्र की हिलोरों से बड़े-बड़े जहाज निकल जाते हैं। यह कहना अत्यन्त सरल है कि मन को शान्त रखें, पर यह इतना आसान कार्य नहीं है, इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए। विवेक-विचार के द्वारा हमें जगत की समस्याओं का हल निकालना चाहिए और अपने संस्कारों को बदलने का अभ्यास करना चाहिए। इस प्रकार हम अपने मन को शान्त रख सकते हैं।

दृढ़ता – जब माताएँ घर में सब्जियाँ बनाती हैं, तो कई बार उनकी उँगलियाँ चाकू से कट जाती हैं, पर इसके बाद भी वे सब्जियाँ बनाना नहीं छोड़ देतीं। जब बच्चा पहली बार चलना सीखता है, तो कई बार गिरता है, फिर भी वह चलने का प्रयास करता है और इसी प्रकार प्रयास करते-करते एक दिन वह चलना सीख जाता है। जीवन में भी हमारे साथ कुछ ऐसा ही होता है, हम अपने लक्ष्य को पाने के लिए अथक प्रयास करते हैं और लगभग सफलता के बहुत समीप आकर अपना धैर्य खो देते हैं और वह कार्य छोड़ देते हैं। पर किसी कार्य की सफलता उसकी दृढ़ता पर निर्भर करती है। यदि हम अपने कार्य, अपने लक्ष्य, अपने नियमों और अपने आदर्शों के प्रति दृढ़ रहें, तो हमारी सफलता निश्चित होगी। एक दृढ़ व्यक्ति असफल हो जाने पर भी उस कार्य को नहीं छोड़ता, वह पुनः प्रयास करता है और उसकी दृढ़ता एक दिन उसे सफल बनाती है।

- विवेक ज्योति से साभार

स्वतंत्रता दिवस पर्व पर विशेष...

ये मेरा हिन्दुस्तान है



मातृभूमि तेरे कण-कण को मैं, शत-शत वंदन करती हूँ।
तेरे उदर से जो भी वीर हुए, उन्हें आज नमन मैं करती हूँ।।

प्रणाम करूँ मैं इस धरती को, भारत भूमि महान है।
मैं गर्व से कहती हिन्दू हूँ मैं, ये मेरा हिन्दुस्तान है।।

भारत ही एक देश है ऐसा, जिसने सबके दिल को जीता है।
रामायण, महाभारत ग्रंथ, पढ़ते हम भगवद्गीता हैं।।

ज्ञान यहां का गंगा जल-सा, पावन है अविराम है।
प्रणाम करूँ मैं, इस धरती को, भारत भूमि महान है।।

संस्कार, संस्कृति से पूर्ण, भाषा हमारी बोली है।
भिन्न-भिन्न परिधान हमारे, आँचल में दिवाली, होली है।।

‘अतिथि देवो भव’ को सार्थक करता, ये सारा हिन्दुस्तान है।
प्रणाम करूँ मैं, इस धरती को, भारत भूमि महान है।।

ऐ मेरी ज़मीं मैं तेरे लिए, कितने भी दुख और दर्द सहूँ।
पर तेरी शान को आँच ना आए, तेरे ही दिल की बात कहूँ।।

तेरे लिए ही जीती हूँ मैं, तुझ पे ही कुर्बान।
प्रणाम करूँ मैं, इस धरती को, भारत भूमि महान।।

यहाँ के सैनिक समर भूमि में, गाया करते गीता हैं।
यहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता हैं।।

चंदन-सा है देश हमारा, ये तो हमारी शान है।
प्रणाम करूँ मैं, इस धरती को, भारत भूमि महान है।।

उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक ये जो सारा जहान है।
तीन रंगों से सजा तिरंगा, अपने देश की ये पहचान है।।

यहां कृष्ण सा पुरुषोत्तम है, मर्यादित श्रीराम है।
प्रणाम करूँ मैं इस धरती को, भारत भूमि महान है।।

मैं गर्व से कहती हिन्दू हूँ मैं, ये मेरा हिंदुस्तान है।।।

- श्रीमती पूनम व्यास
आनंद गुजरात

बच्चों का कोना

पंचतंत्र से प्रेरक कथा

बन्दर का कलेजा

नदी किनारे एक हरा-भरा विशाल पेड़ था। उस पर खूब स्वादिष्ट फल लगे रहते थे। उसी पेड़ पर एक बन्दर रहता था, बड़ा मस्त कलंदर। जी भरकर फल खाता, डालियों पर झूलता और कूदता-फांदता रहता। उस बंदर के जीवन में एक ही कमी थी कि उसका अपना कोई नहीं था। मां-बाप के बारे में उसे कुछ याद नहीं था न उसके कोई भाई था और न कोई बहन, जिनके साथ वह खेलता। उस क्षेत्र में कोई और बंदर भी नहीं था जिससे वह दोस्ती गांठ पाता। एक दिन वह एक डाल पर बैठा नदी का नजारा देख रहा था कि उसे एक लंबा विशाल जीव उसी पेड़ की ओर तैरकर आता नजर आया। बंदर ने ऐसा जीव पहले कभी नहीं देखा था। उसने उस विचित्र जीव से पूछा 'अरे भाई, तुम क्या चीज हो विशाल जीव ने उत्तर दिया 'मैं एक मगरमच्छ हूँ। नदी में इस वर्ष मछलियों का अकाल पड़ गया है। बस, भोजन की तलाश में घूमता-घूमता इधर आ निकला हूँ'।

बंदर दिल का अच्छा था। उसने सोचा कि पेड़ पर इतने फल हैं, इस बेचारे को भी उनका स्वाद चखना चाहिए। उसने एक फल तोड़ कर मगर की ओर फेंका। मगर ने फल खाया, बहुत रसीला और स्वादिष्ट, वह फटाफट फल खा गया और आशा से फिर बंदर की ओर देखने लगा।

बंदर ने मुस्कराकर और फल फेंके। मगर सारे फल खा गया और अंत में उसने संतोष-भरी डकार ली और पेट थपथपाकर बोला 'धन्यवाद' बंदर भाई। खूब छक गया, अब चलता हूँ। बंदर ने उसे दूसरे दिन भी आने का न्यौता दे दिया।

मगर दूसरे दिन आया। बंदर ने उसे फिर फल खिलाए। इसी प्रकार बंदर और मगर में दोस्ती जमने लगी। मगर रोज आता, दोनों फल खाते-खिलाते, गपशप मारते। बंदर तो वैसे भी अकेला रहता था। उसे मगर से दोस्ती करके बहुत प्रसन्नता हुई। उसका अकेलापन दूर हुआ। एक साथी मिला। दो मिलकर मौज-मस्ती करें तो दुगना आनन्द आता है। एक दिन बातों-बातों में पता लगा कि मगर का घर नदी के दूसरे तट पर है, जहाँ उसकी पत्नी भी रहती है। यह जानते ही बंदर ने उलाहन दिया 'मगर भाई, तुमने इतने दिन मुझे भाभीजी के बारे में नहीं बताया, मैं अपनी भाभीजी के लिए रसीले फल देता। तुम भी अजीब निखटू हो अपना पेट भरते रहे और मेरी भाभी

के लिए कभी फल लेकर नहीं गए।

उस शाम बंदर ने मगर को जाते समय ढेर सारे फल चुन-चुनकर दिए। अपने घर पहुँचकर मगरमच्छ ने वह फल अपनी पत्नी मगरमच्छनी को दिए। मगरमच्छनी ने वह स्वाद भरे फल खाए और बहुत संतुष्ट हुई। मगर ने उसे अपने मित्र के बारे में बताया। पत्नी को विश्वास न हुआ। वह बोली 'जाओ, मुझे बना रहे हो। बंदर की कभी किसी मगर से दोस्ती हुई है।' मगर ने यकीन दिलाया 'यकीन करो भाग्यवान! वर्ना सोचो यह फल मुझे कहाँ से मिले' मैं तो पेड़, पर चढने से रहा। 'मगरनी को यकीन करना पड़ा। उस दिन के बाद मगरनी को रोज बंदर द्वारा भेजे फल खाने को मिलने लगे। उसे फल खाने को मिलते यह तो ठीक था, पर मगर का बंदर से दोस्ती के चक्कर में दिन भर दूर रहना उसे खलने लगा। खाली बैठे-बैठे ऊँच-नीच सोचने लगी।

वह स्वभाव से दुष्ट थी। एक दिन उसका दिल मचल उठा 'जो बंदर इतने रसीले फल खाता है, उसका कलेजा कितना स्वादिष्ट होगा। अब वह चालें सोचने लगी। एक दिन मगर शाम को घर आया तो उसने मगरनी को कराहते पाया। पूछने पर मगरनी बोली 'मुझे एक खतरनाक बीमारी हो गई है। वैद्यजी ने कहा है कि यह केवल बंदर का कलेजा खाने से ही ठीक होगी। तुम अपने उस मित्र बंदर का कलेजा ला दो। 'मगर सन्न रह गया। वह अपने मित्र को कैसे मार सकता है' न-न, यह नहीं हो सकता। मगर को इनकार में सिर हिलाते देखकर मगरनी जोर से हाय-हाय करने लगी 'तो फिर मैं मर जाऊँगी। तुम्हारी बला से और मेरे पेट में तुम्हारे बच्चे हैं। वे भी मरेंगे। हम सब मर जाएंगे। तुम अपने बंदर दोस्त के साथ खूब फल खाते रहना। हाय रे, मर गई, मैं मर गई।'।

पत्नी की बात सुनकर मगर सिहर उठा। बीवी-बच्चों के मोह ने उसकी अक्ल पर पर्दा डाल दिया। वह अपने दोस्त से विश्वासघात करने, उसकी जान लेने चल पड़ा।

मगरमच्छ को सुबह-सुबह आते देखकर बंदर चकित हुआ। कारण पूछने पर मगर बोला 'बंदर भाई, तुम्हारी भाभी बहुत नाराज है। कह रही है कि देवरजी रोज मेरे लिए रसीले फल भेजते हैं, पर कभी दर्शन नहीं दिए। सेवा का मौका नहीं

दिया। आज तुम न आए तो देवर-भाभी का रिश्ता खत्म। तुम्हारी भाभी ने मुझे भी सुबह ही भगा दिया। अगर तुम्हें साथ न ले जा पाया तो वह मुझे भी घर में नहीं घुसने देगी।

बंदर खुश भी हुआ और चकराया भी 'मगर मैं आऊँ कैसे' मित्र, तुम तो जानते हो कि मुझे तैरना नहीं आता। मगर बोला 'उसकी चिन्ता मत करो, मेरी पीठ पर बैठो। मैं ले चलूँगा न तुम्हें।' बंदर मगर की पीठ पर बैठ गया। कुछ दूर नदी में जाने पर ही मगर पानी के अंदर गोता लगाने लगा। बंदर चिल्लाया 'यह क्या कर रहे हो' मैं डूब जाऊँगा। मगर हसाँ 'तुम्हें तो मरना है ही। उसकी बात सुनकर बंदर का माथा ठनका, उसने पूछा 'क्या मतलब?'

मगर ने बंदर को कलेजे वाली सारी बात बता दी। बंदर हक्का-बक्का रह गया। उसे अपने मित्र से ऐसी बेईमानी की आशा नहीं थी।

बंदर चतुर था। तुरंत अपने आप को संभालकर बोला 'वाह, तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैं अपनी भाभी के

लिए एक तो क्या सौ कलेजे दे दूँ। पर बात यह है कि मैं अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ। तुमने पहले ही सारी बात मुझे न बताकर बहुत गलती कर दी। अब जल्दी से वापिस चलो ताकि हम पेड़ पर से कलेजा लेते चलें। देर हो गई तो भाभी मर जाएगी। फिर मैं अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाऊँगा।

अक्ल का मोटा मगरमच्छ उसकी बात सच मानकर बंदर को लेकर वापस लौट चला। जैसे ही वे पेड़ के पास पहुँचे, बंदर लपककर पेड़ की डाली पर चढ़ गया और बोला 'मूर्ख, कभी कोई अपना कलेजा बाहर छोड़ता है?' दूसरे का कलेजा लेने के लिए अपनी खोपड़ी में भी भेजा होना चाहिए। अब जा और अपनी दुष्ट बीवी के साथ बैठकर अपने कर्मों को रो। ऐसा कहकर बंदर तो पेड़ की टहनियों में लुप्त हो गया और अक्ल का दुश्मन मगरमच्छ अपना माथा पीटता हुआ लौट गया।

सीख :

1. दूसरों को धोखा देने वाला स्वयं धोखा खा जाता है।
2. संकट के समय बुद्धि से काम लेना चाहिए।

शक्तियों को खोलने का मार्ग

मनुष्य का यह स्वभाव है कि दूसरे आदमी उसे जैसा बार बार कहते हैं, धीरे धीरे वह स्वयं भी अपने बारे में वैसा ही विश्वास करने लगता है।

चाहे हम ऊपर से दूसरों की बातों से मन फेर लें किन्तु दूसरों की बातचीत और टीका-टिप्पणी का गुप्त प्रभाव हमारे ऊपर बहुत जल्दी पड़ता है। हम चाहे वास्तव में लाख अच्छे ही हों पर यदि हमें अपने अच्छेपन का सबूत दूसरों के शब्दों द्वारा नहीं मिलता, तो हमारे गुप्त मन पर गहरा आघात पहुँचता है। हमारे अच्छेपन के गुण क्षीण होने लगते हैं।

श्री श्रीप्रकाश जी ने एक बार श्रीमती ऐनी बेसेंट से पूछा था कि 'हम भारतीयों में क्या दोष है कि हम उन्नति नहीं कर पाते।'

श्रीमती ऐनी बेसेंट शिष्टाचार की मूर्ति थीं। वे किसी के हृदय को कष्ट देना नहीं चाहती थीं। जब श्री श्रीप्रकाश जी ने बार बार आग्रह किया, तो उन्होंने केवल इतना ही कहा था .. 'तुम लोगों में उदारता नहीं है।'

श्रीमती ऐनी बेसेंट तो सदा से ही भारतीयों की प्रशंसक थीं। लेकिन जिस त्रुटि की ओर उन्होंने हमारा ध्यान आकृष्ट किया था, वह दूसरों को प्रोत्साहन देने में उदारता की कमी थी।

वास्तव में प्रोत्साहन का अभाव हमारे राष्ट्रीय जीवन की एक बड़ी कमजोरी बन गई है। हम दूसरे के प्रति दो चार अच्छे या मीठे शब्द कहने के बजाय उसे तुच्छता का भ्रम कराना ही पसन्द करते हैं।

बहुत से माता पिता, शिक्षक इत्यादि में यह खोटी आदत होती है कि बच्चों की जरा सी भूलों पर अथवा शीघ्र पाठ न समझ सकने पर चिढ़कर कटु वचनों का उच्चारण करने लगते हैं। 'तुमसे कुछ न होगा, तुम्हारे दिमाग में भूसा भरा हुआ है, तुमसे जीवन में कुछ न होगा'

इन संकेतों का ऐसा कुप्रभाव पड़ता है कि कोमल शिशु अपनी महानता को नहीं पहचान पाता। बालक वैसे ही भावुक होता है। जरा सी मानसिक ठेस से उसमें तुच्छता की हानिकार भावना जकड़ जाती है और उसकी बाढ हमेशा के लिए रुक जाती है। आप गम्भीरता से देखें तो आपको अनेक ऐसे डरे-दुबके भीरू प्रकृति के अधपनपे बच्चे मिल जाएंगे, जो इस तुच्छता की ग्रन्थि से परेशान हो अपनी महानता न खोज सके हैं, न पनपा ही सके हैं।

इसलिये जिसका सुधार करना हो, उसके सद्गुणों को सही दिशा में प्रोत्साहित कर उसकी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियों का मार्ग खोलिए।

एक बार हस्तिनापुर नरेश दुष्यन्त आखेट खेलने वन में गये। जिस वन में वे शिकार के लिये गये थे उसी वन में कण्व ऋषि का आश्रम था। कण्व ऋषि के दर्शन करने के लिये महाराज दुष्यन्त उनके आश्रम पहुँच गये। पुकार लगाने पर एक अति लावण्यमयी कन्या ने आश्रम से निकल कर कहा, 'हे राजन्! महर्षि तो तीर्थ यात्रा पर गये हैं, किन्तु आपका इस आश्रम में स्वागत है।' उस कन्या को देख कर महाराज दुष्यन्त ने पूछा, 'बालिके! आप कौन हैं?' बालिका ने कहा, 'मेरा नाम शकुन्तला है और मैं कण्व ऋषि की पुत्री हूँ।' उस कन्या की बात सुन कर महाराज दुष्यन्त आश्चर्यचकित होकर बोले, 'महर्षि तो आजन्म ब्रह्मचारी हैं फिर आप उनकी पुत्री कैसे हुई?' उनके इस प्रश्न के उत्तर में शकुन्तला ने कहा, 'वास्तव में मेरे माता-पिता मेनका और विश्वामित्र हैं। मेरी माता ने मेरे जन्म होते ही मुझे वन में छोड़ दिया था जहाँ पर शकुन्त नामक पक्षी ने मेरी रक्षा की। इसी लिये मेरा नाम शकुन्तला पड़ा। उसके बाद कण्व ऋषि की दृष्टि मुझ पर पड़ी और वे मुझे अपने आश्रम में ले आये। उन्होंने ही मेरा भरण-पोषण किया। जन्म देने वाला, पोषण करने वाला तथा अन्न देने वाला-ये तीनों ही पिता कहे जाते हैं। इस प्रकार कण्व ऋषि मेरे पिता हुए।

शकुन्तला के वचनों को सुनकर महाराज दुष्यन्त ने कहा, 'शकुन्तले! तुम क्षत्रिय कन्या हो। तुम्हारे सौन्दर्य को देख कर मैं अपना हृदय तुम्हें अर्पित कर चुका हूँ। यदि तुम्हें किसी प्रकार की आपत्ति न हो तो मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ।' शकुन्तला भी महाराज दुष्यन्त पर मोहित हो चुकी थी, अतः उसने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। दोनों ने गन्धर्व विवाह कर लिया। कुछ काल महाराज दुष्यन्त ने शकुन्तला के साथ विहार करते हुए वन में ही व्यतीत किया। फिर एक दिन वे शकुन्तला से बोले, 'प्रियतमे! मुझे अब अपना राजकार्य देखने के लिये हस्तिनापुर प्रस्थान करना होगा। महर्षि कण्व के तीर्थ यात्रा से लौट आने पर मैं तुम्हें यहाँ से विदा करा कर अपने राजभवन में ले जाऊँगा।' इतना कहकर महाराज ने शकुन्तला को अपने प्रेम के प्रतीक के रूप में अपनी स्वर्ण मुद्रिका दी और हस्तिनापुर चले गये।

एक दिन उसके आश्रम में दुर्वासा ऋषि पधारे। महाराज दुष्यन्त के विरह में लीन होने के कारण शकुन्तला को उनके

आगमन का ज्ञान भी नहीं हुआ और उसने दुर्वासा ऋषि का यथोचित स्वागत सत्कार नहीं किया। दुर्वासा ऋषि ने इसे अपना अपमान समझा और क्रोधित हो कर बोले, 'बालिके! मैं तुझे शाप देता हूँ कि जिस किसी के ध्यान में लीन होकर तूने मेरा निरादर किया है, वह तुझे भूल जायेगा।' दुर्वासा ऋषि के शाप को सुन कर शकुन्तला का ध्यान टूटा और वह उनके चरणों में गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगी। शकुन्तला के क्षमा प्रार्थना से द्रवित हो कर दुर्वासा ऋषि ने कहा, 'अच्छ यदि तेरे पास उसका कोई प्रेम चिन्ह होगा तो उस चिन्ह को देख उसे तेरी स्मृति हो आयेगी।'

महाराज दुष्यन्त के सहवास से शकुन्तला गर्भवती हो गई थी। कुछ काल पश्चात् कण्व ऋषि तीर्थ यात्रा से लौटे तब शकुन्तला ने उन्हें महाराज दुष्यन्त के साथ अपने गन्धर्व विवाह के विषय में बताया। इस पर महर्षि कण्व ने कहा, 'पुत्री! विवाहित कन्या का पिता के घर में रहना उचित नहीं है। अब तेरे पति का घर ही तेरा घर है।' इतना कह कर महर्षि ने शकुन्तला को अपने शिष्यों के साथ हस्तिनापुर भिजवा दिया। मार्ग में एक सरोवर में आचमन करते समय महाराज दुष्यन्त की दी हुई शकुन्तला की अँगूठी, जो कि प्रेम चिन्ह थी, सरोवर में ही गिर गई। उस अँगूठी को एक मछली निगल गई।

महाराज दुष्यन्त के पास पहुँच कर कण्व ऋषि के शिष्यों ने शकुन्तला को उनके सामने खड़ी कर के कहा, 'महाराज! शकुन्तला आपकी पत्नी है, आप इसे स्वीकार करें।' महाराज तो दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण शकुन्तला को विस्मृत कर चुके थे। अतः उन्होंने शकुन्तला को स्वीकार नहीं किया और उस पर कुलटा होने का लाँछन लगाने लगे। शकुन्तला का अपमान होते ही आकाश में जोरों की बिजली कड़क उठी और सब के सामने उसकी माता मेनका उसे उठा ले गई।

जिस मछली ने शकुन्तला की अँगूठी को निगल लिया था, एक दिन वह एक मछुआरे के जाल में आ फँसी। जब मछुआरे ने उसे काटा तो उसके पेट से अँगूठी निकली। मछुआरे ने उस अँगूठी को महाराज दुष्यन्त के पास भेंट के रूप में भेज दिया। अँगूठी को देखते ही महाराज को शकुन्तला का स्मरण हो आया और वे अपने कृत्य पर पश्चाताप करने लगे। महाराज ने शकुन्तला को बहुत ढुँढवाया किन्तु उसका पता नहीं चला।

कुछ दिनों के बाद देवराज इन्द्र का निमन्त्रण पाकर देवासुर संग्राम में उनकी सहायता करने के लिये महाराज दुष्यंत इन्द्र की नगरी अमरावती गये। संग्राम में विजय प्राप्त करने के पश्चात् जब वे आकाश मार्ग से हस्तिनापुर लौट रहे थे तो मार्ग में उन्हें कश्यप ऋषि का आश्रम दृष्टिगत हुआ। उनके दर्शनों के लिये वे वहाँ रुक गये। आश्रम में एक सुन्दर बालक एक भयंकर सिंह के साथ खेल रहा था। मेनका ने शकुन्तला को कश्यप ऋषि के पास लाकर छोड़ा था तथा वह बालक शकुन्तला का ही पुत्र था। उस बालक को देख कर महाराज के हृदय में प्रेम की भावना उमड़ पड़ी। वे उसे गोद में उठाने के लिये आगे बढ़े तो शकुन्तला की सखी चिल्ला उठी, 'हे भद्र पुरुष! आप इस बालक को न छुएँ अन्यथा उसकी भुजा में बँधा काला डोरा साँप बन कर आपको डस लेगा।' यह सुन

कर भी दुष्यंत स्वयं को न रोक सके और बालक को अपनी गोद में उठा लिया। अब सखी ने आश्चर्य से देखा कि बालक के भुजा में बँधा काला गंडा पृथ्वी पर गिर गया है। सखी को ज्ञात था कि बालक को जब कभी भी उसका पिता अपनी गोद में लेगा वह काला डोरा पृथ्वी पर गिर जायेगा। सखी ने प्रसन्न हो कर समस्त वृत्तान्त शकुन्तला को सुनाया। शकुन्तला महाराज दुष्यंत के पास आई। महाराज ने शकुन्तला को पहचान लिया। उन्होंने अपने कृत्य के लिये शकुन्तला से क्षमा प्रार्थना की और कश्यप ऋषि की आज्ञा लेकर उसे अपने पुत्र सहित अपने साथ हस्तिनापुर ले आये।

महाराज दुष्यंत और शकुन्तला के उस पुत्र का नाम भरत था। बाद में वे भरत महान प्रतापी सम्राट बने और उन्हीं के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष हुआ।

ईशावास्यमिदं सर्वं

ईशोपनिषद् ग्रंथ में मनुष्य को भौतिक संग्रह करने की अपनी लालसा पर नियंत्रण करने का उपदेश अधोलिखित मंत्र के माध्यम से दिया गया है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

ईशोपनिषद्, मन्त्र

जिसका सार कुछ यूँ है, जड़-चेतन प्राणियों वाली यह समस्त सृष्टि परमात्मा से व्याप्त है। मनुष्य इसके पदार्थों का आवश्यकतानुसार भोग करे, परंतु 'यह सब मेरा नहीं है के भाव के साथ' उनका संग्रह न करे।

मुझे इस मंत्र के व्याख्याकारों द्वारा दिये गये अर्थों में पूर्ण साम्य नहीं दिखा। मैं दो-तीन का उल्लेख कर रहा हूँ। 'The Ten Upanishads' नामक पुस्तक में श्री पुरोहित स्वामी एवं डब्ल्यू. बी. यीट्स ने संक्षेप में लिखा है: 'Whatever lives is full of lord. Claim nothing; enjoy, do not covet His property.'

श्रीमद् ए. सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने उक्त मंत्र का अर्थ दिया है: इस ब्रह्मांड के भीतर की प्रत्येक जड़ अथवा चेतन वस्तु भगवान् द्वारा नियंत्रित है और उन्हीं की संपत्ति है। अतएवं मनुष्य को चाहिये कि अपने लिए केवल उन्हीं वस्तुओं को स्वीकार करे जो उसके लिए आवश्यक हैं, और जो उसके भाग के रूप में नियत कर दी गयी हैं। मनुष्य को यह भलीभाँति जानते हुए कि अन्य वस्तुएं किसकी हैं, उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए।

मेरे पास गीता प्रेस, गोरखपुर, की भी एक पुस्तक है,

'कल्याणः उपनिषद् अंक'। उसमें अन्य कई उपनिषदों की भी चर्चा है। उसमें उक्त मंत्र का अर्थ इस प्रकार दिया है: 'अखिल ब्रह्मांड में जड़-चेतन स्वरूप जो भी जगत् है, यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है। उस ईश्वर को साथ रखते हुए त्यागपूर्वक (इसे) भोगते रहो, आसक्त मत होओ (क्योंकि) धन-भोग्य पदार्थ-किसका है, अर्थात् किसी का नहीं है।'

ईशोपनिषद् की विस्तृत व्याख्या संस्कृत में आदि शंकराचार्य द्वारा की गयी है। उनकी व्याख्या के आरंभ में मंत्र के बाद हिन्दी में यह अर्थ दिया गया है: 'जगत् में जो कुछ स्थावर-जंगम संसार है, वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादनीय है' अर्थात् उसे भगवत्स्वरूप अनुभव करना चाहिये। उसको त्याग भाव से तू अपना पालन कर। किसी के धन की इच्छा न कर। 'शांकरभाष्य में जगत् का अर्थ वनस्पति आदि जैसे स्थावर और पशुपक्षियों जैसे जंगम प्राणीवर्ग से है, ऐसा मेरी समझ में आया। वे सब ईश्वर के ही अंश हैं इस अर्थ में वे उसके द्वारा आच्छादनीय हैं, वह उनमें व्याप्त है। भुञ्जीथा: 'भुज' क्रियाधातु से बना क्रियापद है। भुज् के अर्थ भोग करना और पालन करना, दोनों ही हैं। उक्त भाष्य के अनुसार व्यक्ति को आदेश है कि वह प्राकृतिक संपदा का अपने पर निर्भर सभी जनों का पालन करते हुए भोग करे। किंतु यह ध्यान में रखे कि अंततः वह संपदा किसी की नहीं, अतः उसके संग्रह की इच्छा न करे।

स्वयं को इच्छाओं से मुक्त कर पाना ही तो सर्वाधिक कठिन है। यदि वही हो पाता तो इस विश्व में कई संमस्याएँ पैदा ही न होतीं।

सिंहासन बत्तीसी

दूसरी पुतली चित्रलेखा की कहानी

अगले दिन जैसे ही राजा भोज ने सिंहासन पर बैठना चाहा तो दूसरी पुतली बोली- जो राजा विक्रमादित्य जैसा गुणी हो, पराक्रमी हो, यशस्वी हो वही बैठ सकता है इस सिंहासन पर।

राजा ने पूछा, विक्रमादित्य में क्या गुण थे। 'पुतली चित्रलेखा ने कहा, सुनो। 'एक बार राजा विक्रमादित्य की इच्छा योग साधने की हुई। अपना राजपाट अपने छोटे भाई भर्तृहरि को सौंपकर अंग में भभूत लगाकर जंगल में चले गए। उसी जंगल में एक ब्राह्मण तपस्या कर रहा था। देवताओं ने प्रसन्न होकर उस ब्राह्मण को एक फल दिया और कहा, 'जो इसे खा लेगा, वह अमर हो जाएगा।' ब्राह्मण ने वह फल अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी ने उससे कहा, 'इसे राजा को दे आओ और बदले में कुछ धन ले आओ'।

ब्राह्मण ने जाकर वह फल राजा को दे दिया। राजा भर्तृहरि रानी को बहुत प्यार करता था। उसने वह फल अपनी रानी का दे दिया। रानी का प्रेम शहर के कोतवाल से था। रानी ने वह फल उसे दे दिया। कोतवाल एक वेश्या के पास जाया करता था। उसने वह फल वेश्या को दे दिया। वेश्या ने सोचा कि, 'मैं अमर हो जाऊंगी तो भी पाप कर्म करती रहूंगी। अच्छा होगा कि यह फल राजा को दे दूं। वह जिंएंगे तो लाखों का भला करेंगे।' यह सोचकर उसने दरबार में

जाकर वह फल राजा को दे दिया। फल को देखकर राजा चकित रह गए। उन्हें सारा भेद मालूम हुआ तो बड़ा दुख हुआ। उसे दुनिया बेकार लगने लगी। एक दिन वह बिना किसी से कहे-सुने राजपाट छोड़कर घर से निकल गए।

देवराज इंद्र को यह मालूम हुआ तो उन्होंने राज्य की रखवाली के लिए एक दूत भेज दिया। इधर जब राजा विक्रमादित्य की योग-साधना पूरी हुई तो वह लौटे। दूत ने उन्हें रोका। विक्रमादित्य ने उससे पूछा तो उसने सब हाल बता दिया। विक्रमादित्य ने अपना नाम बताया, फिर भी दूत ने उन्हें न जाने दिया। बोला, 'तुम विक्रमादित्य हो तो पहले मुझसे लड़ो।' दोनों में लड़ाई हुई। विक्रमादित्य ने उसे पछाड़ दिया। दूत बोला, 'मुझे छोड़ दो। मैं किसी दिन आपके काम आऊंगा।'

इतना कहकर पुतली बोली, राजन्, क्या आप में इतना पराक्रम है कि इंद्र के दूत को हरा कर अपना गुलाम बना सको, यदि नहीं तो आप इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी नहीं हैं। इस प्रकार दूसरे दिन भी राजा भोज सिंहासन पर नहीं बैठ सके।

तीसरी पुतली चन्द्रकला की कहानी पढिये आगामी अंक में.....

- सिंहासन बत्तीसी से साभार

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते ।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ (गीता 9.22)

जो लोग अनन्य भाव से मेरे दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए निरन्तर मेरी उपासना करते हैं, उनकी जो आवश्यकताएँ होती हैं, उन्हें मैं पूरी करता हूँ और जो कुछ उनके पास है, उसकी रक्षा करता हूँ। तात्पर्य यह है कि जो एक क्षण भी कृष्णभावनामृत के बिना नहीं रह सकता, वह चौबीस घंटे कृष्ण का चिन्तन करता है और श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, वन्दन, अर्चन दास्य, सख्यभाव तथा आत्मनिवेदन के द्वारा भगवान के चरणकमलों की सेवा में रत रहता है। ऐसे कार्य शुभ होते हैं और आध्यात्मिक शक्ति से पूर्ण होते हैं जिससे भक्त को

आत्मसाक्षात्कार होता है और उसकी यही एकमात्र कामना रहती है कि वह भगवान का सान्निध्य प्राप्त करे। ऐसा भक्त निश्चित रूप से बिना किसी कठिनाई के भगवान के पास पहुँचता है। यह योग कहलाता है। ऐसा भक्त भगवत्कृपा से इस संसार में पुनः नहीं आता। क्षेम का अर्थ है भगवान द्वारा कृपामय संरक्षण। भगवान योग द्वारा पूर्णतया कृष्णभावनाभावित होने में सहायक बनते हैं और जब भक्त पूर्ण कृष्ण भावनाभावित हो जाता है तो भगवान उसे दुखमय बद्ध जीवन में फिर से गिरने से उसकी रक्षा करते हैं।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम शैक्षणिक परिषद्

विनम्र निवेदन

परम हर्ष का विषय है कि ब्रह्माजी की नगरी और गुर्जरगौड़ ब्राह्मणों के उद्गम स्थल तीर्थराज पुष्कर में समाज के वरिष्ठ बन्धुओं ने 5 फरवरी 1902 को भूमि क्रय कर महर्षि गौतमजी का मन्दिर व गौतमाश्रम निर्माण की योजना बनाई। इस के लिए 25 मार्च 1956 को समाज बन्धुओं का ट्रस्ट बनाया गया और इस ट्रस्ट को आश्रम के विकास का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सौंपा गया। हमें अतीव प्रसन्नता है कि अपना अखिल भारतीय श्री गौतमाश्रम पुष्कर गत 120 वर्ष का स्वर्णिम इतिहास लिए खड़ा है।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति के विधान में धारा 12 (ग) एवं (घ) के रूप में समाज बन्धुओं के बहुमुखी उन्नति हेतु प्रावधान कर दिया गया था।

धारा (ग) देश-विदेश के विभिन्न प्रान्तों नगरों तथा ग्रामों में निवास कर रहे समाज के प्रीतिपूर्ण संगठन तथा उनके आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, मानसिक व शारीरिक कल्याण हेतु यथा सम्भव साधन जुटाना।

धारा (घ) उपरोक्त धारा (ग) में वर्णित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आश्रम में भारतीय संस्कृति के अनुरूप धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, शारीरिक तथा कला कौशल और वाणिज्यिक व्यवसाय सम्बन्धी सद्शिक्षा के प्रचार के लिए व्यवस्था करना।

वर्तमान प्रबन्ध कार्यकारिणी एवं ट्रस्ट समिति ने 7 मार्च 2021 को विधान में संशोधन कर इसको निम्नानुसार और अधिक विस्तृत रूप दिया है - तकनीकि, मेडिकल, पैरामेडिकल, वेद, ज्योतिष, संस्कृत विद्यालयी, महाविद्यालयी, शिक्षण प्रशिक्षण सम्बन्धी सद्शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए विद्यालय, महाविद्यालय, छात्रावास आदि के लिए भूमि क्रय करना। ट्रस्ट समिति के निर्णयानुसार इस भूमि पर प्रथम चरण में पटवारी, शिक्षक, ग्राम सेवक, पुलिस एवं तकनीकि शिक्षा की कोचिंग कक्षाएँ प्रारम्भ करना तथा छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास। इस योजना का लाभ समाज के ग्रामीण क्षेत्र के समाज बन्धुओं को प्राप्त हो सकें। इस योजना पर लगभग 6 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है। भविष्य में इसमें परिवर्तन भी होते रहेंगे।

अतः उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ट्रस्ट समिति के

निर्णयानुसार नागौर रोड़ पर आश्रम से 5.5 कि.मी. दूर तथा मुख्य सड़क से 500 मी. अन्दर 8 बीघा 17 बिस्वा भूमि क्रय हेतु सहमति बनी है।

ट्रस्ट समिति के निर्णयानुसार श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति के आधीन श्री पुष्कर गौतमाश्रम शैक्षणिक परिषद् का गठन प्रस्तावित है। इस समिति के एक-एक लाख के 500 सदस्य बनाये जायेंगे। प्रत्येक सदस्य को एक-एक लाख रुपये का सहयोग देना अनिवार्य होगा। ये सदस्य आजीवन होंगे।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम शैक्षणिक परिषद् द्वारा संचालित की जाने वाली सभी शिक्षण संस्थाओं के संचालन का सम्पूर्ण दायित्व परिषद् के आजीवन सदस्यों का होगा। इन्हीं सदस्यों में से परिषद् की प्रबन्ध समिति का चयन होगा तथा श्री पुष्कर गौतमाश्रम अध्यक्ष, मंत्री भी परिषद् के भी अध्यक्ष, मंत्री होंगे। ट्रस्ट समिति में रिक्त स्थान होने पर सम्बन्धित क्षेत्र के परिषद् सदस्यों को प्राथमिकता दी जायेगी। अतः इस प्रस्तावित महत्वाकांक्षी योजना की क्रियान्विति हेतु सभी वर्तमान ट्रस्टी एवं समाज बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि एक-एक लाख रुपये के अधिकाधिक आजीवन सदस्य बनाकर समाज की भावी पीढ़ी के भविष्य-निर्माण में महति भूमिका का निर्वहन करने में अपना अमूल्य सहयोग व समर्थन प्रदान करें।

समाज में भामाशाहों की कमी नहीं है आवश्यकता है दृढ़ संकल्प के साथ प्रयास करने की। कहते हैं -
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
लहरों से डरने वालों की नाव कभी पार नहीं होती।।

आइए, इसी दृढ़ संकल्प के साथ समाजोत्थान में तन, मन, धन से स्वयं सहयोग करें तथा अन्य बन्धुओं को भी प्रेरित करें। जैसा कि दानदाता भामाशाहों के बारे में कहा गया है -

जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।

दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन को काम।।

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी बहुत सटीक कहा है -

तुलसी पंछिन के पीये, घटे ना सरिता नीर।

दान दिये धन न घटे, जो सहाय रघुवीर।।

- मोहनराज उपाध्याय

- वैकुण्ठेश्वर प्रसाद शर्मा

अध्यक्ष

मंत्री